

॥ अर्हम् ॥

जिनकृपाचंद्रसूरिविरचित

गिरनार पूजा

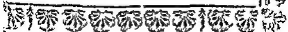
स्तवनादि संग्रहः।



उन्डे नीवासी मा धनराजजी
ानी और रतलाम-निवासी
चाद्याईने छपाया।

द्वितीयावृत्ति प्रति ५००
२४४१]. विक्र सं १९७१ [ई० १९१५

मुद्रक —
किसनदास कापड़िया 'जैनविजय' प्रिन्टिंग प्रेस,
ाटियाचकला, लक्ष्मीनारायणवाडी—सूरत।





Printed by Ishverlal Kasandas Kapadia
at Jain Vijaya" Printing Press Khapatia chakla Surat
and
Published by Dhanrajaji Jhunhani
Narsingarh (Malwa)



अनुक्रमणिका ।



Printed by Ishverlal Kasandas Kapadia
at 'Jain Vijaya" Printing Press Khapatia chakla Surat
and
Published by Dhanrajaji Jhunhani
Narsingarh (Malwa)



अनुक्रमणिका ।

श्रीमज्जिनकृपाचन्द्रसूरिजी महाराजके उपदेशसे

प्राचीन पुस्तकोद्धारफन्डके तरफसे

छपते ग्रन्थो।

ग्रन्थ	मददगारका नाम	गाम
१ गणधरसार्धशतक.–	बाबू चुन्नीलाल पन्नालाल,	बम्बई
२ जयतिहुअणवृत्ति.–	सेठानी आनन्दकुंवरबाई,	रतलाम
३ प्रश्नोत्तरसार्धशतकः–	जव्हेरी फकीरचद चेलाभाई,	सुरत
४ दीवालिकल्प प्रा० सः–	गुलालचद शीवजीवोरा,	कच्छभुज
५ विशेषशतक–	लखमीचद वेद,	आगरा
६ प्राकृतव्याकरणम्–	हीरालाल सिवदास	मेदपुर
७ संदेहदोलावली–	हेदराबाद संघ–गुलाबचद गोमागी-	आकुआरी
८ पचलिंगीप्रकरण–	पीताबर पननी	सुहारी
९ कल्पभाषा–	जव्हेरी हीरालाल केशरीचन्द्र,	नागपुर
१० चैत्यवन्दनकुलकवृत्तिः–	वंदेवदास सुगनचद मदनचदजी-सुगडी,	बीकानेर
११ वृहत् स्तवनावली–	कमराबाई,	सुरत
१२ दादासाहेब चरित्र–	सघ०	हेदराबाद

विषय	पृष्ठ



ग्रन्थ मददगारका नाम गाम

१२ देवप्रतिक्रमण—गुजराबाद, वगड
१३ श्रावकनित्यकृत्य संग्रह —थानमलजी मुम मलजी, हैदराबाद
१४ गिरनारपुजास्तवनसंग्रह—धनराजजी सजामी, नरशिंगड
१५ दीपमालिकाप्रकरण—गडाचन्द शीवजी• वोरा कच्छमुन
१६ पञ्चप्रतिक्रमण—मन,
प्रम कापी
१७ संवेगरंगशाला —झहेरी प्रेमचन्द कल्याणचन्द, सुरत
१८ आचारप्रदीपिका
१९ अनुयोगद्वारमूल
२० ऋषिमंडलवृत्ति यादिशचन्दनकृत
२१ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति जैनहर्षीटीका
२२ प्राकृतश्रीपालचरित्र
२३ बारेपर्वे व्याख्यान हिन्दीभाषान्तर



अर्हम्

गणधरेन्द्रो विजयनेनगम

जैनाचार्य श्रीमत्जिनकृपाचन्द्रसूरिविरचिता

श्रीगिरनारजीनी पूजा

लिख्यते ।

॥ दोहा ॥ स्वस्ति श्री मंगलकरण । थमणपास जिणंद ॥ प्रणमी पदपंकज सदा । प्रभुना धरि आनंद ॥ १ ॥ तीरथ जगमांहि घणा । तेहमां अधिक विशेष ॥ शत्रुंजय रेवतागिरि तणो । वर्णन करुं संक्षेप ॥ २ ॥

॥ दूहा सोरठा ॥

सोरठ देश सोहामणो । सहु देशा सिरदार । तेमांहि तीरथ प्रगट । श्रीगिरिवरगिरनार ॥ ३ ॥ कल्याणक जिहां त्रण थया । दीक्षाज्ञान निर्वाण ॥ नेमिजिणंद दयानिधि । यादव कुलनभ भाण ॥ ४ ॥ पूजा रचुं गिरिराजनी । मनमां धरि अतिप्यार ॥ पूजानी विधि मेलवी । भाव अधिक विस्तार ॥ ५ ॥

ढाल रागनी देशाक झप्ताल

अनन रागेण गायते ।

पूर्वमुख सावन करिदशन पावनम् । ण्देशी पूर्व भरी शुचिथई शुद्धअनुभव लई ॥ करधरि कलश शुचिजल उदारम् ॥ १ ॥ पहिर खीरोदक वारि सुहकोशक ॥ धूपवासित सदोत्तरीय सार ॥ २ ॥ गंगा–सिन्ध्वादिना खीरसागर तणा । तीर्थजल औषधि मिश्रकीजै ॥ मि० ॥ ३ ॥ आठ जाती-तणा कलशभरि सुरगणा स्नात्र प्रभुनी रचेसुर गिरीन्दे ॥ अ० ॥ ४ ॥ इम भविभावकरि शुद्ध समकित धरि । जिनतणी पूजकरो चित्त धारि । अ० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीपरमात्मने अनंतानंतज्ञान शक्तये गिरिनारगिरौ श्रीनेमिजिनेंद्राय जलं यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥

अथ २ पूजा ।

दोहा ॥ नेमिजिणद दिणदसम । शिवसुख लच्छीकंद रैवतगिरिवर मंडणो । पूजनकरो अमंद ॥ १ ॥ घनकेशर मृगमदवलि बावनचंदन संग । अम्बर घनसार मेलवी करो विलेपनअंग ॥ २ ॥

॥ रागनी भैरवी ॥

विलेपन करियै प्रभुजीके अंग ॥ वि० ॥ जिनवर–कोतनु फरसन सेती । पामेजिन गुणसंग

॥ वि० ॥ पारसफरसत लोहा कंचन, तिम होवे कीटकभृंग । वि० ॥ २ ॥ शिवादेवी अंगजहोप्रभु, श्यामवरण द्युति चंग । वि० ॥ ३ ॥ चरण युगल कछपसम प्रभुना करपंकज जलसंग । वि० ॥ ४ ॥ वदनचंद्र अकलंकित कीनो भालअर्ध शशि अंग । वि० ॥ ५ ॥ निलोत्पलसम नेत्रयुगल फुनि, काम-राग थयो भंग । वि० ॥ ६ ॥ केशरचंदन मृगमद अम्बर प्रभुपूजो मनरंग । वि० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं० केशर चंदन यजामहे स्वाहा २

अथ ३ पूजा ।

दोहा ॥ तृतीयपूज जिनवरतणी करे भविक उजमाल । फूलसुगंधी लेईने चाढेभरि भरि थाल ॥ १ ॥ समवसरणमां सुरकरे पुष्पवृष्टि शुभभक्ति, तिमश्रावक शुभ भावथी पूजाकरे यथाशक्ति ॥ २ ॥ रागनी वृन्दावनी सारंग ॥ प्रभु अरचा रचो मिल भविजना । नानाविधना फूलसुगंधी लेईतुम आवो इकमना प्रभु० ॥ १ ॥ त्रिकरण योगकरी प्रभुपूजो चित्तधरी शुभभावना ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ चारनिक्षेपे जिनवर जाणो । मनमंदिर मेलावना । प्रभु० ॥ ३ ॥ अनुयोगद्वार आवश्यकसूत्रे वेदनिक्षेप सुहावना । प्रभु० ॥४॥ ठवणासमवसरण त्रिगड़ तिगिमां प्राणी भावकहावना । प्रभु० ॥ ५ ॥ द्रव्यजिनवर श्रेणिक

पमुहा। नाम ऋषभादि सुहावना। प्रभु० ॥ ६ ॥ इनविधि प्रभुकी भक्तिकरिये शमरस अमृतश्रावना। प्रभु० ॥७॥ कृपाकरिने साहिब मुझने कीजे कृतारथ पावना। प्रभु० ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं० पुष्प पूजा० ॥३॥

अथ चतुर्थी पूजा

दोहा ॥ यादवकुल—नो चन्दलो ब्रह्मचारी शिरमोट। धाजीसम जिनवरतणी पूजा करो करजोट ॥ १ ॥

॥ सोरठा ॥

अगर चन्दन घनसार, मेरहारस माहि मेलिये मृगमद अम्बर सार धूप सदा करिपूजिये ॥ २ ॥

॥ रागनी सोरठ ॥

सेवोभविनेमिजिणद सुखकारा, करि धूप धूम मनुहारा। सेवो भवि० ॥१॥ गिरिनार गिरि मंडण दुख खंडण भविजन औधसुधारा। कर्मप्रबल दलदाहकरनमिस धूपदहोसुविचारा। सेवोभवि० ॥ २ ॥ सोरी पुरमें जन्म प्रभुनो, समुद्र विजय कुलभाणा। शिवादेवी उदर शुक्ति मुक्ताफल। चित्रानक्षत्र वखाना। सेवोभवि० ॥ ३ ॥ च्यवन जन्म कल्याणक प्रभुना। सोरीपुरमें जाना। गिरिनार गिरिपर सहसावनमें। दीक्षाग्रही सुख खाना। सेवोभवि० ॥४॥ चोसठ इन्द्र करे उछरंग। जिन–

सेवा मनुहारा । कृपाचन्द्र-प्रभुने जाणो निश्रेय-सदातारा । सेवोभवि० ॥५॥ ॐ ह्रीं० धूप यजा० ४

अथ ५ पूजा

दोहा ॥ पाचमी पूजा दीपनी प्रगटेज्ञान उद्योत । करो भविक जगना रंगी मन वाछित सुखहोत ॥१॥ शिवादेवीनो लाडलो अतुल बली वडवीर श्याम-सलुणो नाहलो नेमिनाथ सुखसीर ॥ २ ॥

रागनी कल्यान,

अहो प्रभुपूजारचो चित्त चंग ॥ अहो० । रेवत-गिरिपर नेमिजिनेश्वर केवल लह्यो सुखसंगे अहो प्रभु० ॥ १ ॥

च्यार निकायके सुरसुरी मिलके । तिगडो रचै अतिरंग । अहो प्रभु० ॥ २ ॥ समवसरण में राजे प्रभुजी देशनादे भवभंग अहो० ॥ ३ ॥ साधु साध्वी वैमानिक देवी । अग्निकूण उमंग ॥ अहो० ॥ ४ ॥ ज्योतिषि भवनपति व्यन्तर सुरी, रहे नैरित जिनसंगे ॥ अहो० ॥ ५ ॥ वायवविदिशे एहिज देवो, जिनवाणी सुणे रंगे ॥ अहो० ॥ ६ ॥ वैमानिक सुर मानव-स्त्रीजन, ईशान दिशिमे संगे ॥ अहो० ॥ ७ ॥ बारपरषदा जिनवाणीसुण, मगन हुवे मन रंग । अहो० ॥ ८ ॥ गोघृत भरि मणिपात्र अनूपम । दीपककरो मन चंगे । अहो० ॥ ९ ॥

ॐह्रीं० दीप यजामहे स्वाहा ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ ८ पूजा ॥

दोहा ॥ अक्षत अक्षत लेईने । स्वस्तिक रचो विशाल ॥ ज्ञानादिक गुणपुंजथी । पामो मंगल माल ॥ १ ॥ राजीमतीको छांडके, नेमि चढ्या गिरनार ॥ रथ नेमि राजी मती लियो संयमभार ॥ २ ॥

॥ गगनी माट ॥

नेमीजिन पूजोतोही ॥ प्रभुरैवतगिरि सिणगार । नेमि जिन० आकणी ॥ उत्तमशालि प्रमुख धन्यअधान । चाखोतोमही ॥ अक्षयसुख कारण जगतारण ॥ जिनवर शरण ग्रही । प्रभु० ॥ १ ॥ आधेपर्था आगार अनोपम । जगमे साभलही । श्रीगिरनार नेमि फरशनते कीर्तिव्याप रही । प्रभु० ॥२॥ भरत नरेश्वर सघलेईने, शेत्रुजयात्रा टही ॥ चैत्य निर्मापण नवीन करीने, रेवत मार्ग ग्रही । प्रभु० ॥ ३ ॥ स्वर्णगिरिपर नेमि जिणंदनो । माणि कनकादि मयी । देरासर नवीन रचीने । नेमिनी पडिमा ठाही । प्रभु० ॥ ४ ॥ क्रोड देवमे ब्रह्मेन्द्र आयो भतरनोसुजसकही । पहिलो उद्धार प्रथम चक्रिनो, एम अनेक लही । प्रभु० ॥ ५ ॥ गिरिवर मंडण नेमिजिनेशर । भेटो भावलही

सिद्धि सौंध चढवा मनरगै, । सोपानपक्ति कही प्रभु० ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं० अक्षत यजामहे स्वाहा ॥६॥

॥ अथ ७ पूजा ॥

दोहा । सातमी पूजा साचवें, श्रावक शुचि शुभभावे । भात भात नैवेद्यना, थाल भरि भरि लावे ॥ १ ॥ नेमनगीनानाथने, आगलधरो मनरग॥ अक्षय सुख वरवा भणी, पूज करो चितचग ॥२॥

॥ चाल लहर सारंग ॥

रामत रमवा मे गई ए देशी । नेमि जिनेसर पूजीये, एतो रैवतगिरिनो रायो हे माय ॥ नेमि० ॥ समवसरणमे बैसिन । एतो वचनामृत वरसायो हे माय । भव्य हृदय भूसींचीने । एतो बोधि बीज निपजायो हो माय । नेमि० ॥ १ ॥ मेघध्वनि जिम गाजता, एतो सघचतुर विध ठायो हे माय । देश विदेशमा विचरता, एतो शिवमारग दरसायो हे माय । नेमि० ॥ २ ॥ सेत्रुज गिरिवर फरशने । एतो गिरिनार नाथ कहायो हे माय । अढारसहस्र वाचयमी । एतो वरदत्तादि गणरायो हे माय । नेमि० ॥ ३ ॥ चालीससहस्र श्रमणीभली एतो-यक्षणी प्रमुख सुहाया हे माय। एक लाख गुणोत्तर सहस एतो श्रावकनो समुदायो हे माय । नेमि० ॥ ४ ॥ त्रणलक्षअढार सहसवली, एतो सुजश

श्राविका पायो हे माय भोज्यपदारथ धी प्रभु पूजी
गतो अनाहार नामकहायो हे माय। नेमि० ॥ ५ ॥
इति अर्हा० नैवद्य यज० ॥ १॥

॥ अथ अष्टमी पूजा ॥

दोहा ॥ परम पुन्य परमातमा। परमानन्द
प्रधान ॥ परमेश्वर प्रभु पूजिये परम विज्ञान
निधान ॥१॥ अष्टमी पूजा जिन तणी, अष्टमी गति
दातार, फल पूजा करो भाव सु। जिम लहो
सुख्व अपार ॥२॥

॥ रागणी काफी त्रिताल ॥

उज्जयत गिरिगुण गावो। तुंम मणिमाणिकमें
वधावो। उज्जयत० नेमिजिनेसर जगअलवेसर, मन
मंदिरमा लावो ॥ जिनवर चरणनो शरण ग्रहीने
समरणमा लयलावो ॥ मणिमा०॥१॥ तीर्थपती था-
वीमम स्वामी, नेमि निरजन ध्यावो। भविक जीव
सुखकारण तारण, जिनदरशन मन भावो मणि०
॥ २ ॥ दोय भेद दरशनना जाणो। शुद्धाशुद्ध
स्वभावो शुद्धदरशनथी निज गुण प्रकटे। आतमगु-
णहुलसावो। मणि० ॥३॥ काल अनादि-भवबनमे
भटकत कर्मरिपो गण दावो। कृपा करी मुज
दरशन दीजे ॥ अनुभव अमृत पावो। मणि०
॥ ४ ॥ नाना जातीना फल लेईने, आगल प्रभुजीने

ठावो । कृपाचद्र यह फलपूजासे, मनवांछित फल पावो । माणि० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्री० इत्यादि फल यजामहे स्वाहा ॥ ८ ॥

॥ अथ पूजा ९ ॥

दोहा–नवमी ध्वजनी पूजना। लावो जिन दरबार ॥ सधवस्त्री लेई करि करे प्रदक्षणा सार ॥१॥ ॥१॥ धवलमंगलगाताछता वाजित्र विविध प्रकार। कैलासगिरिना शिखरपर। आरोपोसुविचार ॥२॥

॥ राग श्री ॥

जिनगुणगान श्रुत अमृत ॥एदेशी॥ ध्वजपूजन करो सुख सदन ॥ध्व०॥ सहस्र योजन दंड मनोहर। सुवरणमय जनमन हरण ॥ ध्व० ॥ १ ॥ किंकिणी रणकत शब्द मनोहर, दिव्यध्वनि सुखकर श्रवण॥ ध्व० ॥ २ ॥ एक हजारके अष्ट ऊपर वलि। सोहे पताका पचवरण । ध्व० ॥ ३ ॥ मंद समीर प्रचारे लहकती । मानु स्वर्गथी अवतरण । ध्व० ॥४॥ मनमोहन ए ध्वजनिरखीने। भविने परमानन्दकरण । ध्व० ॥ ५ ॥ इण गिरिके पदनाम सुहकर नन्दभद्र गिरिसुखकरण ॥ ध्व० ॥ ६ ॥ आषाढसुदी अष्टमी दिनकीनो । शिवरमणीको कर ग्रहण । ध्व० ॥ ७ ॥ पांचसे षट् त्रिंशत मुनि साथे । सादिअनन्त

स्थितिवरण । ध्व० ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं इत्यादि ध्वजं यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥ ॥ ८ ॥

अथ दशमी पूजा

दोहा । दशमी मंगल पूजाना, अष्ट मंगल लिखसार ॥ रजतना तंदुल लेईने अखंड उज्वल मनुहार ॥ १ ॥ पुष्पवृष्टिकरे सुरगणा, पंचवरण सुविशाल ॥ योजन भूमंडले प्रमित, पूजो जगत-दयाल ॥ २ ॥ पास जिनदा प्रभु मेरे मन वसिया ॥ इसचालमे ॥ चालोभविकजन यात्रा करिये । यात्राकरिशिव संपतवरिये । टेक० ।

चालो० । जीर्णदुर्गना चैत्य जुहारी । तलहटिये जइ रात्रि रहिये ॥ चालो० ॥ १ ॥ श्रेणीसोपान चढीशुभभावे । नेमिजिनदको ध्यान जोधरिये । चालो० ॥ २ ॥ प्रथमटुंकमे बिम्बप्रभुना अदभुत आदि प्रसन्न मनधरिये । चालो० ॥ ३ ॥ मेरुसमीप गुहा जिनमन्दिर निरखनिरखभवि मनमाठरिये चालो० ॥ ४ ॥ वहा अनेक जिनचैत्यनमिने । बीजीटूक जिनचरणकुवरिये । चालो० ॥५॥ रथने मीजोको दरस सरसकरि । तृतीयशिखर शासन सुरि समिये । चालो० ॥६॥ चौथीनेमिवीर जिनेसर पचमीटूक नमी दुःख हरिये । चालो ॥ ७ ॥ सहसा वनाजिन चरण नमीने चैत्य प्रवाडको इम परि

रिये । चालो० ॥ ८ ॥ गजपद कुडनो नीरलेईने
ात्रमहोत्सवकरि सुखवरिये । चालो० ॥ ९ ॥
गलपूजनारिष्ट निवारक कृपाचन्द्रशिवपद अनु-
रिये । चालो० ॥ १० ॥ ओं न्हीं श्री अष्टमगल
जामहे ॥१०॥ कलश रागनीधन्याश्री प्रभुजीको
ुयश अम्बरघन गाजैरैवत गिरिवरको प्रभुमडण।
मिजिनन्द विराजे, तीर्थपतीना गुणगावतां
सना सफल कहाजे । प्रभु० ॥ १ ॥ श्रीखरतर
णनायक लायक जिनचारित्र सुरिरजै । गिरिना-
गिरिनी स्तवनाकीनी श्रीसघभक्तिनेकाजै । प्रभु०
२ ॥ पचतीर्थनी रच नारगे कीनी भविकहित
ाजै दरशन देखत अनुभवप्रकटे, जिमसाक्षात
गेरिछाजै प्रभु० ॥ ३ ॥ भगवइअगे लालवागमै
ाभरयोसघसुकाजे । मनई थद्र रहियोमासो
तपूरण हित काजै। प्रभु० ॥ ४ ॥ सम्वत उगनीसे
ापर बहोत्तर पोषधवलभृगु छाजे, दशमींदीन
गिरनागुण गाया भावभले सुसमाजै । प्रभु० ॥५॥
श्रीजिनकीर्त्तिरत्न शाखाधर, युक्ति अमृतगुरुराजे
कृपाचन्द्र जिनस्तवना कीनी निजगुण निर्मल काजे
प्रभु० ॥ ६ इतिश्रीगिरिनारपूजा ।

॥अथ आरति लिख्यते॥

जय । जय । जिनराया ॥ श्री नेमिजिनेश्वर राया । भविमिल गुण गाया० जय ॥ १ ॥ मंगल आरति पूजा करता । भविने सुख आया । मोक्ष मारग दीपाया राजुलपतिराया ॥ जय० ॥ २ ॥ सिवादेवी नंदन वंदन । समुद्र विजय राया ॥ सौरीपुरमें जाया । द्वारिकापुरी आया ॥जय० ॥३॥ रैवतगिरिके सहसा वनमें । दीक्षा सुरराया ॥ केवल रमणी पाया । शिवनगरी धाया ॥ जय जय० ॥ ॥ ४ ॥ इन विध पूजा, आरति करीने सुख संपति पाया । मुम्बइ पुरमें सुहाया । पंचतीरथ राया ॥ जय जय० ॥ ५ ॥ भाव भले जिन भक्ति करता । भविजनमन भाया । कृपाचन्द सूरिराया । मंगल वरताया ॥ जय जय० ॥ ६ ॥ इति

श्री

तीरथ जगजय कारेरे, भविवंदो आनंदे, वंदो आनंदे, वंदो आनंदे, तीरथ जगजय कारेरे, भवि-वंदो आनंदे—

श्री सिद्धाचल गिरिवर मंडन-आदि जिनंद सुखकाररे । भविवंदो आनंदे व ती ज भवि ॥१॥

रेवत गिरिपर नेमिजिनेश्वर–भव दुःख भजन हाररे। भविवदो आनदे, व ती भवि ॥ २ ॥

समेतासिखरपर वीशजिनेश्वर–भेटत भवजल पाररे। भविवदो आ व ती भवि ॥ ३ ॥

अष्टापदपर चौवीशप्रभुजी–भरत भराया मनोहाररे। भविवदो आ व ती भवि ।४।

आबु गिरिपर आदि जिनदा–तीर्थ परम आधाररे। भविवदो आ व भवि ॥ ५ ॥

सुरई पच तीरथ रचना–लाल बाग मझाररे। भविवदो आ व ती भवि ॥ ६ ॥

उगणीसोयोत्तरे चौमासो–कृपाचद्र परिवाररे भविवदो आ व ती भवि ॥७॥

भगवती सूत्र व्याख्याने वाच्यो–भवि जीवो हितकाररे। भविवदो आ व ती भवि ॥८॥

महोत्सव हुआ अति मनोहारी–जगजन आनदकाररे। भविवदो आ व ती भवि ९

सूरि पद सघे मिलकर दीना–गुरु भक्ति विचाररे। भविवदा आ व ती भवि ॥१०॥

पौषी पुनम गुरु शुभ लग्ने–जयजय शब्द उचाररे। भविवदो आ व ती भवि ॥११॥

सुमती सागर गुरु सुपसाये–मणीसागर दिल धाररे। भविवदा आ व ती भवि ॥ १२ ॥

अथश्री वीसस्थानक चैत्यवंदन

श्रीअरिहंत अनंत कांति सिद्ध निज गुण रामी,
प्रवचन अचारिज स्थविर उवझाया हितकामी,
साधु नाण दंसण नवम विनय चारित्र वखाणो,
ब्रह्म क्रिया तप गोयम जिन वेयावच जाणो ॥१॥
समाधि अपूर्व ज्ञान श्रुत शुभ भक्तिनित सार,
तिरथ प्रभावन विमलो निरूपम सुख दातार ॥२॥
प्रथम चरम जगदीस सकल सेवी लही संपदा,
इकदो थानक पद जपी बावीस जिनवर पदमुदा ॥३॥
ए विंशती थानक करता ए ज्ञाता ए जिनपद,
ए सेवनथी भवी लहे त्रिभुवन पति कृपाचंद ॥४॥

॥ इति श्री वीसस्थानक चैत्यवन्दन संपूर्णम् ॥

॥ अथश्री वीसविहरमानजीको चैत्यवंदन ॥

सिमंधर युगमंधर बाहु सुबाहु जाण,
सुजातस्वयंप्रभु सानमो ऋषभानन मन आण॥१॥
अनंत विर्यने सुरप्रभु विमल वज्रधर कहिये,
चंद्रानन चंद्र बाहुजी भुजग नेम प्रभु लहिये ॥२॥
ईश्वर श्रीवयर सेनजी महाभद्र जिनदेव,
देव जस अजित विर्यजी सुरपति सारे सेव ॥३॥
पंच विदेहे [illegible] जिनेसर जाण,
[illegible] कल्याण, ॥४॥
[illegible] ॥

॥ अथ श्री सिद्धाचलजीका चैत्यवंदन ॥

सिद्धाचल सेवु सदा सहु तीरथ सिरदार,
सोरठ देश सोहामणो तिहा ए गिरिवर सार ॥१॥
तीन भुवनविच एहवो तीरथ कोइ न होय,
श्रीमंधर वयणे करी शेत्रुंज महात्म जोय ॥२॥
श्रीयुगादि जिनराजजी समवसर्या इण ठाम,
तेहथी ए तीरथ वडो अविचल सुखनो धाम ॥३॥
काति पुनिम दश कोड सु ए द्राविड वारिखिल्ल जाण,
सिद्धि वधू रंगे वर्या कृपाचंद मन आण ॥ ४ ॥
॥ इति सिद्धाचलजी चैत्यवंदन संपूर्णम् ॥



॥ अथश्री वीरजिन चैत्यवंदन ॥

चोविसमा जिनवर नमु महावीर जिनदेव,
शांति सुधामय चंदलो सुरनर सारे सेव ॥१॥
भद्रेसरमे दीपतो दरामर मनुहार,
वीर जिनेसर जग जयो बावन देहरी सार ॥२॥
त्रिसलानंदन जग धणी ए सुख संपति करतार,
त्रिकरण योगे प्रणमता कृपाचंद सुखकार ॥३॥
॥ इतिश्री वीरजिन चैत्यवंदन संपूर्णम् ॥



॥ अथश्री नेमिजिन चैत्यवंदन प्रारंभ ॥

नेमिसर जिन जग धणी रेवत गिरि सिणगार,

अनत श्येन वज्र धर्मने शाति मृग पहिचानो ॥३॥
कुंथुनाथने छोकडो अर नन्दावर्त होय,
मल्लीघट मुव्रत काछवो नमि निलोत्पल जोय ।४।
नेमि सख फणि पार्श्वने वीर सिंह कहाय,
कृपाचद्र ध्वज युगनमु चउवीसे जिनराय ॥५॥

॥ इति चतुरविंशतीजिनलाछन चैत्यवदन सपूर्णम ॥

॥ श्रीचद्रप्रभुजीनु स्तवन ॥



श्रीचद्रप्रभु साहीबा शिववासी सुरनामीरे,
अरज करु कर जोडने निसुणो त्रिभुवन स्वामीरे श्री १
काल अनादि लगे मही साधारण तरु पामीरे,
पृथव्यादिक माहे लह्यो सख्यातीत दुःख धामीरे श्री २
काल सख्याते बि ति चउ पचेद्रिपणो पामीरे,
नाना गतिना दुःख सह्या ते जाणो शिवगामीरे श्री ३
भवोदधि ताप निवारवा मे सुण्यो तुहीज कामीरे,
तिण तुज चरणकमलतणीसेवा अविचल धामीरे श्री ४
तु त्राता ससारनो तुहीज दीन उद्धारीरे,
सुजवल्लभ तु मुज धणी ओरनको ससारीरे श्री ५
ज्ञायक ज्ञेयानतनो लोकालोक प्रकाशीरे,
सुख घन मदिर ते लह्यो तुहिज छो शिववासीरे श्री ६
उगणीसे पैतालीसमें वरधापुरे हितकारीरे,

फागणसुदीतृतीयादिनेप्रतिष्ठ्यासुजस धारीरे श्री ७
युक्तिअमृत गुरुराजनी युक्ति प्रवर सुविचारीरे,
कृपाचंद्रप्रभुजीजिर्ण मन मकल सुखकारीरे श्री ८

॥ धर्मनाथस्वामीजीनु स्तवन ॥

आज आनंदमयो त्रीभुवनपति श्रीधर्मजिनेसर
भेटीया आ
प्रभुमातु पिता जसु छाजे छे सुव्रतामात विराजे छे,
प्रभु देखी कुमति भाजे छे प्रभु देखी सुमति
गाजे छे आ ॥ १ ॥
प्रभु धनुष पैंतालीस काया छे दशलाख वरष मल
भाया छे,
प्रभु रत्नपुरीमें जाया छे आज आनंदमयो
श्रीभुवनपति० ॥ २ ॥
प्रभु मस्तक मुगट कुंडल सोहे कंठे हार कर श्रीफल
होवे,
प्रभु देखत त्रिभुवनकु मोहे आज आनंदमयो
श्रीभुवनपति० ॥ ३ ॥
प्रभु समवसरणमें बिराजे छे जसु चोत्रीश अतिशय
छाजे छे,
प्रभु पात्रीश वाणीए गाजे छे आज आनंदमयो
श्रीभुवनपति० ॥ ४ ॥

शुभ अग्निवेद निधिभूवर्षे वैशाख शुक्ल सप्तमी दिवसे,
करी चैत्य प्रतिष्ठा अतिहरखे आज आनंदभयो
त्रिभुवनपति ॥ ५ ॥
श्रीरायपुर नगरे सुखकारी ,सुजाणमल पत्नी
पन्नी सारी,
जिणचैत्य करायो हितकारी आज आनंदभयो
त्रिभुवनपति ॥ ६ ॥
गुरुयुक्तिअमृतमुनि सुपसायें प्रवचनभक्तिअति
उलसायें,
कहे कृपाचंद्र मुनि हरखाये आज आनंदभयो
त्रिभुवनपति० ॥७॥

॥ नवपदजीनुं स्तवनं ॥

नव पद जगहितकारी मेरे भवियण नव०
वारी जावुंवार हजारी मे० न
अरिहंत सिद्ध अवर आचारज उवज्झाया मनुहारी,
सर्व साधु पंचम पद प्रणमो विषयविकार
निवारी मे न ॥ १ ॥
दरसण श्रद्धानाण चरणयुत बारहविधतप जाणो,
ए नवपदनां ध्यानथी निरुपम
परमातम पहिचानो मे न. ॥ २ ॥
ए नवपद जे इकचित्त ध्यावे रोगादिक नवि होवे,

फागणसुदीतृतीयादिनेप्रतिष्ठयासुजसधारीरे श्री ७
युक्तिअमृत गुरुराजनी युक्ति प्रवर सुविचारीरे,
कृपाचन्द्रप्रभुर्कोजिर्ये मघ सकल सुखकारीरे श्री ८

॥ धर्मनाथस्वामीजीनु स्तवन ॥

आज आनदभयो त्रीभुवनपति श्रीधर्मजिनेसर
भेटीया आ
प्रभुभानु पिता जसु छाजे छे सुव्रतामात विराजे छे,
प्रभु देखी कुमति भाजे छे प्रभु देखी सुमति
गाजे छे आ ॥ १ ॥
प्रभु धनुष पैतालीस काया छे दशलाख वरष मन
भाया छे,
प्रभु रत्नपुरीमे जाया छे आज आनदभयो
त्रीभुवनपति० ॥ २ ॥
प्रभु मस्तक मुगट कुडल सोहे कठे हार कर श्रीफल
होवे,
प्रभु देखत त्रिभुवनकु मोहे आज आनदभयो
त्रीभुवनपति० ॥ ३ ॥
प्रभु समवसरणमे विराजे छे जसु चोत्रीश अतिशय
छाजे छे,
प्रभु पात्रीश वाणीए गाजे छे आज आनदभयो
त्रीभुवनपति० ॥ ४ ॥

शुभ अग्निवेद निधिभूवर्षे वैशाख शुक्लसप्तमी दिवसे,
करी चैत्य प्रतिष्ठा अतिहरखे आज आनंदभयो
त्रिभुवनपति ॥ ५ ॥
श्रीरायपुर नगरे सुखकारी सुजाणमल पत्नी
पन्नी सारी,
जिणचैत्य करायो हितकारी आज आनदभयो
त्रिभुवनपति० ॥ ६ ॥
गुरुयुक्तिअमृतमुनि सुपसाये प्रवचनभक्तिअति
उलसाये,
कहे कृपाचंद्र मुनि हरखाये आज आनदभयो
त्रिभुवनपति० ॥७॥

॥ नवपदजीनुं स्तवनं ॥

नव पद जगहितकारी मेरे भवियण नव०
चारी जावुवार हजारी मे० न
अरिहत सिद्ध अवर आचारज उवज्झाया मनुहारी,
सर्व साधु पंचम पद प्रणमो विषयविकार
निवारी मे न ॥ १ ॥
दरसण श्रद्धानाण चरणयुत बारहविधतप जाणो,
ए नवपदना ध्यानथी निरुपम
परमातम पहिचानो मे न ॥ २ ॥
ए नवपद जे इकचित ध्यावे रोगादिक नवि होवे,

गहने ग्यावे अनुपमश्रद्धा आपरूपे करी जोडे मे न ३
शुभ ओगणीमे तैयालीसे ज्येष्ट धवलमनहांसे,
विधिपुर्वक नवपदनी अर्चा भई त्रयोदशीदीसे मे न ४
पारेख गोत्रे मेरसिंघपत्नी मृगमदानामे मनुहारी,
नवपदनो प्रसाद कराव्यो निशिदिन कृपा
हितकारी मे न ॥ ५ ॥

॥ श्रीश्रेयांसजिनजीनु स्तवन ॥



राग देशी—उनीश इरखभरीमें निरल्या गुरु महाराज दशी

सहु संघ हरख धरी नितवंदो श्रेयांसजिनंद पामो
परमानंद सहु.
विष्णु पिता कुलचंदलोरे विष्णु मातानो नंद,
सीहपुरे प्रभुजनमीयारे अधिक थयो आनंद सहु १
कंचनवरण सोहामणोरे खड्गि लंछन प्रभुपाय,
चोरासी लाखनी स्थिति कहीरे धनुष अशीनो
काय सहु २
प्रभु दरसण जग दोहिलोरे अवरन दोहिलो कोय
प्रभु दरसण पाम्याथकारे भव भव भ्रमण न होय सहु ३
काल अनादि भमतायकारे पाम्यो नहि दीदार,
हिव प्रभुपदपंकज मिल्यारे प्रगटयो हरख
अपार सहु ४

मे जाणु प्रभुथी सहीरे पूरव भवनो नेह,
तेहथी प्रभुने देषतारे जागृत थयो सस्नेह सहु ५
जिनप्रतिमा जिनसारखीरे शाश्वतणे परमाण,
अनुयोगद्वारे भाखीयारे चार निक्षेप परमाण सहु ६
शुभ उगणीसे चमालीसमेरे फाल्गुन सुदिसुखकार,
कृपाचद प्रभु भेटीयारे पाचमी दिन सुविचार सहु.७

॥ श्रीश्रेयांसनाथजीनुं स्तवनं ॥

राग–काफी–श्रेयास जिनेसर तुमारी भविजन
सुखकारी-
पुष्पादिक बहु विध सामग्री सज्ज करी बहु सारी,
सुरियाभसुर इव जिनवरनी पुजा करो सभारी श्रे १
भगवइअगे जिनवरवदना कही गणधर सुविचारी.
जघाचारण विद्याचारण वादे विविध प्रकारी श्रे. २
महानिशीथे चैत्यनिरमापण फल अच्युतचितधारी,
जबुद्वीपपन्नतीये भाख्यो वदननिर्जराकारी श्रे ३
ज्ञाताअगे जीवाभिगमे जिनवंदन अधिकारी,
आवश्यक पचमअध्यने त्रिभुवनचैत्य जुहारी श्रे ४
पचकल्पमाहि पगट पाठ ए पुजा प्रथम सभारी,
चारित्र ग्राहीने स्थविर करावे कृपाचद हितकारी श्रे ५

॥ अथश्री शातिजिन स्तवन प्रारभ ॥

पास जिनदा प्रभु मेरे मन वसीया •(ए देशी)
सानि जिनदा प्रभु सेवो सुखकारी,
मादगगढ महन दु ख खडन,
तुम प्रभु भय भय दूर निवारी मा ॥ १ ॥
अचिरानदन तुम हो स्वामी,
विश्वसेन कुल दिनमणि कारी सा ॥ २ ॥
पूरण ब्रह्म परमेश्वर जगगुरु,
अतिशय गुण गण चित न विसारी सा ॥ ३ ॥
स्यादवाद जिन मुद्रा निरखत,
साति स्वरूप निज हृदया धारी सा ॥ ४ ॥
पचकल्याणक पुजा बहु विधे,
हरख धरी कृपाहित सुखकारी सा ॥ ५ ॥
(॥ इति शातिजिनस्तवन सपूर्णम् ॥

॥ अथश्री शातिजिनस्तवन प्रारभ ॥

समवसरण माराज आज छबिनीकी छाजे हो,
(राग माड)
सातिजिनद माहाराज आजछवि अनुपम राजे
हो सा.
साति सरूप मुज आत्म सुघटे,
निज अध्यात्म गुण गण प्रगटे

परपुद्गल चेतनथी विघटै,
परम आल्हाद विराजै हो सा ॥ १ ॥
तुम स्वामी सेवना सुखदाई,
इंद्रादिक करे अतिहरखाइ,
मिलसुरकुमरी मगल गाइ,
अविचल सुख साजै हो सा ॥ २ ॥
भगवइ ज्ञाता जीवाभिगम वखाणो,
जिनप्रतिमा जिनवर सम जाणो;
इम ठवणा जिन मनमें आणो,
कुमति शठ लाजै हो सा ॥ ३ ॥
कायथापुरे अचिरा सुत सोहै,
उत्सव अठ दिवस शुभ होवे;
भेटे कृपाचद प्रभु मन मोहै,
सुख सपति काजै हो सा ॥ ४ ॥

॥ इति शातिजिनस्तवन सपूर्णम् ॥

॥ अथश्री चद्रप्रभुजीनुंस्तवन प्रारंभ ॥



अखीया मेरे प्रभुजीमे आज लगी ॥ ए देशी ॥
छबि नीकी प्रभुजीकी आज बनी ॥ छबि ॥
चद्रवदन चद्रा प्रभु स्वामी ।
दरिसणसे मेरी सुमति जगी छबि ॥ १ ॥

काल अनादकी सग ए कुलटा ।
जिन देखत मेरी कुमति भगी छवि ॥ २ ॥
सुक्षम बादर निगोदथी निकली ।
पचेंद्री की जात सजी छवि ॥ ३ ॥
पुन्य सयोगे नर भव पामी ।
आत्म अध्यात्म उलसी छवि ॥ ४ ॥
नागपुर सघ सहित प्रभु भेट्या ।
कृपाचद सुभ मति विकसी छवि ॥ ५ ॥
॥ इति श्री चन्द्रप्रभुजीनु स्तवन सपूर्णम् ॥

मिगमर अक्षा पुसो लिविय पुव्वाइ मूल असेसा,
हत्थोचित्तो य तहा दसवुड्ढि कराय नाणस्स ॥१॥
गण विघाप्रकीर्ण केसरीयाने जाजकोलीकतिरायो ए देशि
सेवो भवि ऋषभ जिनद सुखदाई
एतो जिन पुजन चित लाई सेवो
नाभिभूप नदन जग वदन
मरुदेवी मात कहाइ,
श्वेत वरण मन मोहिनी मूरति,
वृषभ लछन सुहाई सेवो ॥ १ ॥
जिनवर सम ठवणा जिन प्रतिमा,
कही गणधर अति साइ,
जैन शास्त्र बहु इण परि भाखै,
जिन पति पूजो भाइ सेवो ॥ २ ॥

सामेर पुरमें श्रीजिन भेटै,
प्रतिदिन भय सवाइ
कृपाचद श्री जिनवर वंदित,
निश्रेयस सुखदाई सेवो ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रीफलोधीपार्श्वनाथ स्तवन प्रारंभ ॥



फलोधि पासजी मुज प्यारारे,
प्रभु थया हरख अपारा ॥ फलो ॥
प्रभु जगत जतु उपगारीरे,
अतिशय निज गुणना धारीरे;
सेवक जन वांछित मारी ॥ फलो ॥ १ ॥
ठवणा जिनवर गुण खाणीरे
ग तुज आगमनी वाणीरे,
कहि निरुपम सुख नीसाणी फलो ॥ २ ॥
आलंबन तुम तणो कहियैरे,
भविजन निज कारज लहियैरे;
जो जिनवर दरिसण पइयै फलो ३ ॥
उपादान कारणता प्रगटेरे,
जो निमित्त कारणना सुघटेरे;
परमानथी आनम विघटै फलो ॥ ४ ॥
प्रभु दरिसण शिव तरु कंदोरे,

प्रभू भेट्या अधिक आणदोरे,
कृपाचद मदा जिन वदोरे फलो ॥ ५ ॥
॥ इति श्रीफलोधिपार्श्वनाथस्तवन सपूर्णम् ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचलजी स्तवन प्रारम्भ ॥

जात्रीडा माइ आबूजीनी जात्रा करेजो ए देशी-
यात्रिडा भाइश्री सिद्धाचल भेटो
चिरसचितदुकृत मेटोरे,
यात्रीडाभाइश्री सिद्धाचल भेटो ॥ ए आकडी ॥
ए महिमारत विराजे निरखता पातिक
भाजेरे या ॥ १ ॥
श्रीवीरजिनेश्वर भाखै शत्रुजयनी
महिमादाखैरे या ॥ २ ॥
पुडरीक गणधारी इहा सिद्धाकर्म
गणवारीरे या ॥ ३ ॥
पाडव प्रमुख जे सिद्धा ए गिरि फरसीसुख
लीधारे ॥ ४ ॥
श्रीरुषभजिनेश्वर वदो चितधरी अति अधिक
आनदोरे या ॥ ५ ॥
रायणतल पगलावार प्रभुवदी वच्छित
सारेरे या ॥ ६ ॥
पुडरीक अतिदीपे निरखता पातिकजीपेरे या ॥७॥

चोमुख जिनवर सोहे देखतां भवि मन
मोहेरे या ॥ ८ ॥
अदभुत बिंब छबि छाजे भवभविसिव
सुख काजेरे ॥ ९ ॥
पाजेंचढता भावे गुण गाता वंछित पावेरे या ॥१०॥
शेत्रुंजय नदी अतिरूडी गहनी महिमानहीं
कूडीरे ॥ ११ ॥
उलकाजोल चेलणातलाइ सिद्धवड
सिद्धमिलावरठाइरे या ॥ १२ ॥
ए गिरिवर पूजे भावे जे नरक नीगोद न
जावेरे ॥ १३ ॥
दरसणरी आस घणेरी ते सफली
सुकृतसेरीरे या ॥ १४ ॥
अनुभव अमृतपीजे कृपाचंदसदामुजदीजेरे
या ॥ १५ ॥

॥ इति श्रीसिद्धाचलजी स्तवन संपूर्णम् ॥

॥अथ श्रीराणपुरजीनुं स्तवन प्रारंभ॥

॥ राग कालगडो ॥

राजपुरे जिन वंदोरे भविया रा
वंदत दुरित निकंदोरे भविया ॥ रा ॥
प्रथमजिनेसर प्रथमतीर्थंकर ।

प्रथमयति जग चदो। प्रथम भिक्षाचार प्रथम नेरसर
चा जिन सुरतरु कदोरे भ रा ॥ १ ॥
चौविस मडप चिहु दिशि सोहे ।
निरख्या परम आनदो ।
आदीश्वर जिन चौमुख राजे ।
जग तारण जिन चदरे ॥ भ रा ॥ २ ॥
चौरासी प्रासाद विराजै ।
जगत दिवाकर वदो ।
पाच प्रासाद छवि सुदर छाजै ।
प्रभु पडीमा थिर नदोरे भ रा ॥ ३ ॥
भुयरा माहि बिंब मनोहर ।
वदे सुर नर इदो ।
भवि उर कमल विबोधन कारण ।
जिनपति प्रगट दिनदोरे ॥ भ रा ॥ ४ ॥
इदोर सघ सहित प्रभु भेटे ।
काटण भव दु ख फदो ।
कृपाचद मुज दरसण दीजै ।
अनुभव रसनो वृदोरे ॥ भ रा ॥ ५ ॥

॥ इति श्रीराणपुर स्तवन सपूर्णम् ॥

॥ अथ श्रीआबुजी स्तवन प्रारभ ॥

श्रीआदि जिनेश्वर भेटीया आबूगिरि सिणगार

चरुदेवीना नदन तुम दरसण मुज मन वस्यो जिम मन
मद चकोर हो । म तु
जिम देखी जल धारने मोर करे अकार हो । म तु ॥१॥
कुमुदनी रजनी कर लही कमलनी जेम दिनद हो । म
मायर जिम वधे चद्रथी तिम मुज मन आनद हो म तु २
नेमिसर जिन राजजी मानि सुधारस चद ।
पारस जिनपति सुखकर
वन्या कुशलसुनींद हो । म. तु ॥३॥
अचलगढे अति दीपता सुवरणमय जिनदेव हो ।
चउगइ सकट चूरवा
सुरनर करे जसु सेन हो म तु ॥४॥
भवोदधि भ्रमणनी वारडी केहने कहिये जाय हो । म
रागादिक रिपु गण भणी
दूर करो जिनराय हो । म तु ॥५॥
आस हती घना दिवसनी सफल थइ ते आज हो । म
जनम कृतारथ माहरो
सीधा वछित काज हो । म तु ॥६॥
तु परमेश्वर बाल हो जीवन प्राण आधार हो । म
भव भव चरणनी चाकरी
मुजने देज्यो हितकार हो । म तु ॥७॥
उगणीसै अठावन समे सुदि फागण रविवार हो । म.
सातम दिने यात्रा करी
कृपाचद सुखकार हो । म तु ॥८॥

॥ इति श्रीआबुजी स्तवन सपूर्णम् ॥

॥ शत्रुंजय पुंडरीकगणधरजी स्तवन ॥

श्रीपुंडरीक गणधर नमु पुंडरगिरि सिणगार लालरे
पांचक्रोड मुनि परिवर्या, कीधो अणसणसार
लालरे पुंड
आदिश्वर जिन उपदिसे, ए तीरथ परसाद ला
सिव कमला तुमे पामस्यो, मेटी मन विषवाद ला पुं
तीरथपतीमा ए अछु, प्रथम तीरथ इमजाण ला
प्रथम सिद्ध सिद्धाचले, तुमे थास्यो महिराण ला पुं
प्रभुनी आणा आदरी, सलेखना चित्तलाय ला
चैत्रीदिन सिवपुर लह्या, घातीकर्म खपाय ला पुं
यात्रा विधिसु कीजीये, जिनजी दियो उपदेश
कृपाचंद गिरिराजनी, चाहे सेवा हमेश ला पुं

॥ तारंगे श्रीअजितजिन स्वामीनुं स्तवनं ॥

राग सोरठ—अजित जिन साहेबाजी प्यारा लागो
राज म्हाने । प्या अ
जित शत्रु विजयाके नंदन, तुम प्रभु गरीब निवाज
अ ॥ १
ए अविनाशी ज्ञान प्रकाशी, शिवपुर कीनो वास

हूँ भव वसीयो तुम गुण रसीयो, आयो तुम धरि आस्म अ ॥ २ ॥
महा गोप महा महाण तुमही, भव अटवी सथ वाह।
भवजलधि निर्यामक तुमही, निजगुण करे उछाह अ ॥ ३ ॥
तु जग तारण वंछित सारण, तुम हो दीन दयाळ।
तु परमेश्वर परउपगारी, सेवक जन प्रतिपाल अ ॥४॥
तारंगे श्रीअजित जिनेसर सरसकूट मनुहार।
नदी समेत अष्टा पद वंदे, कृपाचंद सुखकार अ ॥५॥

॥श्री वरकाणो पार्श्वजिन स्तवन॥



राग धाटो-वर भाव धीर मन धरके, वंदु पार्श्वजिनंद-
पार्श्वजिन लागो प्यारा, तुज गुण अनंत अपार पार्श्व ॥ १ ॥
मूरती मोहनी लागे, जागे पूरव प्रीत। पार्श्व ॥२॥
जिनराज तुम उपगारी, तुम दीठा आनंद पार्श्व ॥३॥
वसु विध जिन पुजन करीए, वरीए सिव सुखसार पार्श्व. ॥४॥
वरकाणे पार्श्वजिन भेट्या, मेट्या सहु दुःख दंद पार्श्व ५
वामा उदर दरि हरिवर, अश्वसेन कुळचंद पार्श्व ।६।
धन्य दिन आज हमारो, वंदे नित कृपाचंद पार्श्व ।७।

॥ शत्रुंजय पुडरीकगणधरजी स्तवन ॥

श्रीपुडरीक गणधर नमु पुडरगिरि सिणगार लालरे
पाचक्रोड मुनि परिवर्या, कीधो अणसणसार
लालरे पुड

आदिसर जिन उपदिसे, ए तीरथ परसाद ला
सिव कमला तुमे पामस्यो, मेटी मन विषवाद ला पुड
तीरथपतीमा हु अछु प्रथम तीरथ इमजाण ला
प्रथम सिद्ध सिद्धाचले, तुमे थास्यो महिराण ला पुड
प्रभुनी आणा आदरी, संलेखना चित्तलाय ला
चैत्रीदिन सिवपुर लह्या, घातीकर्म खपाय ला पुड
यात्रा विधिसु कीजीये, जिनजी दियो उपदेश
रूपचद गिरिराजनी, चाहे सेवा हमेश ला पुड

॥ तारंगे श्रीअजितजिन स्वामीनु स्तवनं ॥

राग सोरठ–अजित जिन माहेपाजी प्यारा लाग
राज म्हाने । प्या
जित शत्रु विजयाके नदन, तुम प्रभु गरीब निवाज
अ ॥ १
तु अविनाशी ज्ञान प्रकाशी, शिवपुर कीनो वास

ु भव वसीयो तुम गुण रसीयो, आयो तुम धरि
आस अ ॥ २ ॥
महा गोप महा महाण तुमही, भव अटवी सथ वाह।
भवजलधि निर्यामक तुमही, निजगुण करे उछाह
अ ॥ ३ ॥
तु जग तारण वंच्छित सारण, तुम हो दीन दयाळ।
तु परमेश्वर परउपगारी, सेवक जन प्रतिपाल अ ॥४॥
तारगे श्रीअजित जिनेसर सरसकूट मनुहार।
नंदी समेत अष्टा पद वंदे, कृपाचंद सुखकार अ ॥५॥

॥श्री वरकाणो पार्श्वजिन स्तवनं॥



राग धाटो-धर भाव थीर मन धरके, वंदु पार्श्वजिनंद.
पार्श्वजिन लागो प्यारा, तुज गुण अनंत अपार
पार्श्व ॥ १ ॥
मूरती मोहनी लागे, जागे पूरब प्रीत। पार्श्व ॥२॥
जिनराज तुम उपगारी, तुम दीठा आनंद पार्श्व ॥३॥
वसु विध जिन पुजन करीए, वरीए सिव सुखसार
पार्श्व ॥४॥
वरकाणे पार्श्वजिन भेट्या, मेट्या सहु दुःख दंद पार्श्व ५
वामा उदर दरि हरिवर, अश्वसेन कुलचंद पार्श्व.।६।
धन्य दिन आज हमारो, वंदे नित कृपाचंद पार्श्व ।७।

॥ श्रीनेमिनाथजीनुं स्तवनं ॥

राग काफी–आज धन्य दिवस हमारा, भट्या श्री नेमिजिनंद आ ॥ १ ॥
गिरनारगिरिवर मंडण स्वामी, यादवकुल नभचंद आ ॥२॥
स्यामवरण छवी सुंदर सोहे, मोहे सुरनर इंद आ ॥३॥
मोह तिमिर भर दूरनिवारण, अभिनव प्रगट दिणंद आ ॥४॥
जगजन तारण विरुद सुणीने,आयो धरी आनंद आ ५
निज गुण अनुभव अमृत दीजे,रूपचंद सुरकंद आ ६

॥ श्रीआदिजिन स्तवनं ॥

आदि जिनेसर भेटीया सुखकारी लो उपगारीरे लो.
शेत्रुंजगिरि सिणगार वाला छो,
नाभिभूप नंदन विभु सु
मरुदेवी मात मलार वा ॥ १ ॥
कंचनवरण सोहामणो सु
धनुप पांचसे काय वा.
चउराशी पुरव लाख आउषो सु ॥ २ ॥
वृषभ लांछन मन भाय वा

जुगला धर्म निवारणो सु जगत नीति वरताय वा भरतादिक निज सुत भणी सु राज्य दीयो भोलाय वा. ॥ ३ ॥ अनुक्रमे दीक्षा आदरी सु च्यारसहस परिवार वा प्रथम पारणो हथणापुरे सु 'पडिलाभे श्रेयासकुमार वा ॥ ४ ॥ पुरीमताल उद्यानमे सु ऊपनो केवलज्ञान वा मरुदेवी शिव थानक लह्यो सु वंदे भरत राजान वा ॥५॥ भुमंडल प्रभू विचरता सु आया सोरठ देश वा ज्या सिद्धाचल गिरिवरु सु सुरनर सेवे हमेश ॥६॥ वा प्रभुजी आय समोसर्या सु गणधर मुनिपरिवार वा समवसरण सुरवर रच्यो सु देशना दिधि उदार वा ॥ ७ ॥ तीरथ महिमा दाखवी सु उत्तम तीरथ एह वा० रायणतल पगला ठवी सु वंदे धन्य नर तेह वा ॥ ८ ॥ फागण सुदी आठम दीने सु पुर्व नवाणु वार वा यात्राफल जिनजी कह्यो सु जगत जतु सुखकार वा ॥ ९ ॥ चौविह संघसु परिवर्या सु प्रभुजी कीध विहार वा अष्टापद मुगते गया सु दशसहस परिवार वा ॥१०॥ सास्वतो तीरथ ए सही सु फरस्या पातिक जाय वा कृपाचंद्र गिरीराजनी सु सेवाथी सुख थाय वा. ॥ ११ ॥

॥ प्रभासपाटण स्तवन ॥

राग रेखता–आये प्रभासपाटणमें, चन्द्र प्रभुका दरश पाया । परम उगणीसे गुणसठे, चरणाम्बुज देख सुख पाया ॥ १ ॥ माघ वदि दूजके दिनसे, परम करतील सुखी आया । गए सब पाप अब मेरे, हरखसे नाथ गुण गाया ॥ २ ॥ सभा जिन राज मन मोहे, पारस छवी स्याम द्युति छाया । साति प्रभु साति सुख दीजे, परम सिव माहि प्रभु पाया ॥ ३ ॥ चरम प्रभु वीरजी राजे, आदि जिनराज मन भाया । अजित जिन देख मन हरखे, नेमकी सीस ग्रही छाया ॥ ४ ॥ जगतमे देव सब निरखे, मेरे दिल कोई नहि भाया । प्रबल भये पुन्य अब मेरे, जगत गुरु देव मन ध्याया ॥ ५ । अमृतसम युक्तिजिनवरकी, तहत कर सिर ठहराया । मुझेहे आस सिवपुरकी, कृपायुतचा उलसाया ॥ ६ ॥

॥ श्रीआदिश्वरजिन स्तवन ॥

राग घुमर–आदि जिणद नित पुजियै, ग विमलाचल गिरि रायो ए माय । नाभि रायकु घदलो, एतो मरुदेवी कुखे जायो ए माय आदि ॥ नगरी विनितानो धणी, एतो आदीश्वर सुखका

ए माय । अष्टापदे शुगते गया, एतो नारे नन काज सुधारी ए माय आदि ॥२॥ ब्रह्मचर्य ... ा नद धारसे एतो, भवि सारग उलगाय ए माय। दृस्सण विन किरिया सहु एतो, शिव साधन नवि थाये ए माय आदि ॥३॥ सजि सिणगार मनोहरू एतो, गोरी मगलगावै हे मा० द्रव्यभाव जिन राजनी एतो पूजाकरी सुख पावै है मा० आ० ॥४॥ वसु दिन उछव रगसु एतो दिन दिन सघ नरायो एमाय। पचम अग पूरण करी एतो, कृपा चद्र गुण गायो ए माय आदि ॥ ५ ॥

॥ इति श्रीआदिश्वरजिन स्तवन सपूर्णम ॥

॥ अथ श्रीपार्श्वनाथजीनु स्तवन प्रारंभ ॥

राग देशी—जीवन म्हारा तेवीसमा जिणचद्र, वामा-नदन मेव्यारे सायावा म्हारा भावसुरे म्हारा राज जीवन। अश्वसेन कुलचद, पाप करम सहु मेव्यारे सायवा अनादिनारे म्हा ॥१॥ जी मूरत मोहन वेल, नीलवरण तनु छाजेरे सा॰ सोहामणीरे म्हा जी॰ मुख छबि अगम अपार, पूनम निशि जिम राजेरे सा रजनी करूरे म्हा ॥२॥ जी नयनअमीरस रेल, कामणगारा प्यारारे मा म्हारा, मन हरेरे म्हा॰ जी॰ भाल विशाल रसाल, अष्टमी शशि सुखकारारे सा भव्य चकोरनेरे म्हा ॥ ३ ॥ जी चिंतामणि

प्रभुपास लोद्रवपुरमें विराजैरे सा सुख करुं म्हा- खीसहसफणा महाराज दरिसण वाछित काजैरे सा. दु ग्हदरे म्हा. ॥ ४ ॥ जी सघ मिल्यो यह थाट है जै घणे गह गाटेरे सा हरखधुरे म्हा जी, अष्टदिवस उछरग रथयात्रा यह रंगेरे सा उमग सुरे म्हा ॥ ५ ॥ जी० दीठो तुम्ह दीदार हिय प्रभु मुजनै तारोरे सा हित धरीरे म्हा जी तुमसम अवरनदेव दीठो नही सुखकारोरे सा जगतमारे म्हा ॥ ६ ॥ जी तुम पद पकजसेव भवभव मुजने मिलज्योरे सा सुहकल्रे म्हा जी एहीज सुणी अरदास वाछित पूरणकरज्योरे सा कृपाकरीरे म्हा ॥ ७ ॥ जी

॥इति श्रीपार्श्वनाथस्तवन सपूर्णम् ॥

॥ अथ श्रीभद्रेशरजी स्तवन प्रारभ ॥

वीर जिनेसर सामलोरे लाल सेवकनी अरदास सुखकारीरे, तारक बिरुद सुहामणो लाल सुणि आयो तुम पास उपगारीरे ॥ वीर ॥ १ ॥ साहिब सुनिजरकीजियैरे लाल सुजप गरिब निवाज ॥ सुख ॥ मनमोहन महिमा निलो त्री लाल ॥ तुम सेवा सुख काज ॥ उ ॥ वी ॥ २

काल अनादि लगे भम्योरे ॥ लाल ॥ भव अटवी विषम अगाध ॥ सुख ॥ क्रोधादिक श्वापद जिहारे ॥ ला ॥ प्रतिप्राणिने दे बाध ॥ उ ॥ वी ॥ ३ ॥ इंद्रिय विषय कटक तिहारे ॥ला॥ दुर्धर शल्यमान ॥ सु ॥ चउगइ मारग चालतारे ॥ ला ॥ मोह करे हेरान ॥ उ ॥ वी ॥ ४ ॥ काल आहेडी केडे पड्योरे ॥ ला ॥ छलताके निशदीश ॥ सुख ॥ ए आपदथी उद्धारोरे ॥ लाल ॥
तुमे मोटा जगदीश ॥ उ ॥ वीर ॥ ५ ॥ भद्रेश्वर भले भावसुरे ॥लाल॥ भेटया श्रीभगवंत ॥सुख॥ तेवीसम जिन सुख कररे ॥ लाल ॥ महिमावंत महंत उ॥ वी ॥ ६ ॥ बावन देहरीमा दीपतारे ॥लाल॥ मनोहर श्रीजिनराज ॥ सुख ॥ अदभुत दीठो देहरोरे ॥ला॥ मानु नवीन रच्यो आज ॥ उ ॥ वीर ॥७॥ दंडकलस सोहे सदारे ॥ लाल ॥ धजा पताका लहकंत ॥ सुख ॥ माटणी जोता म्हनीरे ॥ लाल ॥ भवि मनमा हरखंत ॥ उ ॥ वी ॥ ८ ॥ पूरव पुन्यथी पामीयोरे ॥ लाल ॥ अनुपम जिन सुखचंद ॥ सु ॥ कच्छमंडन श्रीजगधणीरे ॥ लाल ॥ वंदे नित कृपाचंद ॥ उ वी ॥ ९ ॥

॥ इति श्रीभद्रेश्वरजी स्तवन संपूर्णम् ॥

॥ महावीरजिन स्तवन ॥

राग सारट–महावीर जिनराज आज भविभेटोतो सही, भेटोतो सहीर भविक जन भेटो तो सही भवभव संचित पाप करम सट्ट मेटोतो सही महा ॥१॥ ए आ । भद्रेसरमे मोहनी मूरति देखत सुमति लही आतम वस्तु स्वभाव प्रकाशक दिनकर सोभग्रही म ॥२॥ काल अनादि पूद्गल संगे परपरणतिमा रह्यो, प्रभु आलंबन पुन्ये पामी निजगुण ज्ञानग्रही । महा ॥३॥ परव पुन्य उदय भयो सजनी सुखानंद सही, अध्यातम अनुभव आस्वादी कृपायुतचंद्रग्रही महा ॥४॥

इति संपूर्णम्

॥ श्रीभद्रेशरजीनु स्तवन ॥

राग काफी आज प्रभु दारिसण पायो सुजमन हरग्यायो भद्रेसर पुर मंडण स्वामी चोवीसम जिनरायो मनमोहनजिनमुद्रा निरखत दरसण नु लय लायो आ ॥१॥ तारणतरण जिनंद तुज साभली हुतुम चरणे आयो, सुनिजरधर ए सफल करीजे ज्यु सुज हरखसवायो आ ॥२॥मे भववासीतु मीववासी देव

निरंजन प्यारो, भवभव भ्रमण थकी छु हार्यो तिणतारे नरणे आयो आ ॥३॥ जिनप्रतिमा जिनवर समजाणो ए जिन वचन सुहायो जैनशास्त्र पदु इण परे बोले ताते चित्त ठहरायो आ ॥४॥ चन्द्रद्रव्यनिधि शुशुभवरमे फाल्गुन शुदि मन भाया, द्वितीया जिनपद पंकज भेटे कृपाचन्द्र गुणगायो आ ॥५॥

इति संपूर्णम्

॥ अथ श्रीसिद्धगिरीनु स्तवन प्रारंभ ॥

श्रीगिरिराज आन निहालं, कामित पूरण वाञ्छित दाइ ॥ श्रीगिरि ॥ पूरण पुन्य उदय भयो सजनी, उज्जल गिरिकी यात्रा पाइ ॥श्रीगिरि ॥१॥ नाभिको नंदन जगत दिवाकर, इण तीरथ पर आये चलाइ, पूरव निवाणु श्रीजगदीसर, रायण तल निज पगला ठाइ ॥ श्रीगिरि ॥ २ ॥ महिमावंत महतनिराजे, श्रीशत्रुंजय भेटो भाइ, श्री सुखवीर जिनेसर भाखे, सोहमपति मन अधिक सुहाइ ॥ श्रीगिरि ॥३॥ सुरिधनेसर महिमावरणी, पंचम गणधर समति लाइ, द्रव्य भाव विधि पूजन करियेः अष्ट सिद्धि नव निधि घर आइ ॥ श्रीगिरि ॥ ४ ॥ नदगाण निधि चन्द्र संवच्छर, चैत्री पूनिम यात्रा

पाइ, फूलचद सघ सहित जिन भेटै, रूपाचद्र गिरि शिव सुखदाइ ॥ श्रीगिरि ॥ ९ ॥

॥ इति श्रीसिद्धगिरिनु स्तवन सपूर्णम् ॥

॥ आदिजीनेश्वरनु स्तवन ॥



सुगण सनेही साजन श्री सीमधरस्वाम ए देशी आदीश्वर अलवेसर जगपति श्रीजिनराज, अरज सुणि जे सुनिजर करी मुजपर महाराज, परमकृपाल कृपानिधि बिरुद ए तुमचोराज, निर्गुणीने मुजमन अति हरष थयो शुभकाज ॥१॥ जिनवर शम दुजो नहि दीसे जगमे शोण, खिणखिणमे मुजमनमे साभरे तुमतणावेण, अमीय रशीला कामणगारा सुशीलनैण निरखीने,चितडो नित ध्याने तुम गुण लेण ॥ २ ॥ मदमाता रग रात निजनिज ताणे लोग, परमारथ जाणे नहि विर सदगुरु सयोग, गच्छकदाग्रह साचवे दृष्टि रागनो पोय, आतमगुण कषायता तेहनो करे ते शोय ॥३॥ दुसमकाल सयोगे आतम पणु अकुलाय, पूरव पूरुषनो विरह पड्यो ते केम खमाय, जहाजह दृष्टि पसारी देखु तहातहा कोय, दीसे नहि तत्व वेदी जगमे विरला होय ॥४॥ वीतराग विण दुजो

नहि इण जगमें देव, भवभव मे मुजमिलज्यो तुम चरणांनी सेव, स्वारथ साधन शयण सघधी सहुं संसार, परमारथ साधन निरख्यो मे प्रभु निरधार, ॥५॥ तुमही ध्याता तु पुरुषोतम शुद्ध प्रमाण, शिवपथनो परुपक उत्तम ज्ञायक जाण, शिवसुखकारक शंकर अविनाशी राजान, एह स्वरूप नहि जाणे मिथ्यामतेंने मान ॥६॥ एहवा परमातमप्रभुनोदरिशन लह्योआज, हिव अनुमानथी जाणु सीधा वछित काज तु परमेश्वर परमपुरुष उपगारी सार, कृपाचन्द्र जिन मुद्रा अनुपम सुखदातार ॥७॥

इति सपूर्णम्

॥ अथ श्रीसिद्धाचलजी स्तवन प्रारभ ॥

सुणसजनी गिरिराज देख मनमधुकर लीनोरे, आजमुज मनहर लीनोरे ॥ए आकडी॥ श्रीसिद्धाचल शिखर मनोहर, प्रथम तीर्थपति रिषभ जिनेश्वर, समवसरया रायण तल प्रभु त्रिभुवन जस लीनोरे ॥ सुण सजनी गिरि ॥ १ ॥ इन्द्रादिक चउविह सुर मिलकर, समवसरण रचे भक्तिदिलधर, सिंहासन सोहे, जगतगुरु कल्पवृक्ष नगीनोरे ॥ सुण ॥ २ ॥ तीरथ महिमा प्रभुजी भाखे

पुंडरीक गणधर सूत्रे मार्गे, शत्रुजय महातम ग्रथ रची, उपगारज कीनोरे ॥ सुण ॥ ॥ ३ ॥ उज्जगिरिनी यात्रा करता, पुन्य भंडार प्रबल भरता मोहादिक शत्रु दूर करी, निजगुण पयो पीनोरे ॥ ४ ॥ सास्वतो ए गिरिवर नोहै, दरसन सैं भव्य मन मोहे, कृपाचन्द्र जिन वदनते, यात्रा फल लीनोरे ॥ सुण ॥ ५ ॥

॥ इति सिद्धाचलजी स्तवन सपूर्णम् ॥

अथ श्रीसिद्धाचलजी स्तवन प्रारम्भ ।

श्रीसिद्धाचल भेटोरे भविका अशुभ कर्म मह मेटोरे आ पूरवनिवाणु श्रीआदीश्वर इण-गिरिवरपर आयारे । पुडरीक पमुहा चैत्रीदिन सिद्धिवधूलय लायारे श्री ॥१॥ कातिपूनम पर कहीजे द्राबडवारिखिल्ल सीधारे । इम अनेक ए तीरथ फरसी मुक्तितणा सुख लीधारे श्री ॥२॥ तीनभवनमे तीरथ वरुला यात्राफल क्रम जाणोरे । नगरग्रामादि चैत्य जुहार्या ए फल मनमा आणोरे श्री ॥३॥ जिन कल्याण भूमी फरस्या दशगुणो फल तुमे पामोरे ।जयुरक्षनो चैत्यदर्शने शतगुणो फलसुखपामोरे श्री ।४। धातकीखडे पुष्करद्वीपे रुचक अजनगि

कहियेरे जिनवदन न्हवणादि करता सहसगुणोफल लहियेरे श्री ॥७। अष्टमनदीसरना जिनालय कुंडल चैत्यरदेरे। क्रमथी दशगुणोफलपामीजे मानुपोत्तर चिरनदेरे श्री ।६। वैभारागिरिपरजीराजिनेसर समेतशिखरजिनधीसरे। जैनाष्टनेवलीसेलशिखरना सास्वताचैत्यजगीशरे श्री ॥७॥ गिरनारमडननेमीजिनेसर अष्टापद चोवीशरे । कोटिगुणो फलपदूनो क्रमथी वंदो विसवावीशरे श्री ॥८॥ एहथी शत्रुजयगिरि भेटया अनतगुणो फल जाणोरे। ए कारणथी भवियण भावे यात्राकरणमनआणोरे श्री ॥९॥ छहरीपाली जे नर भेटे ते ए शुभ फल पावेरे। कुमतीकदाग्रहदरनिवारी निजआतमघरआवेरे श्री ॥१०॥ उगणीसेपासठफागणसुदि बीजदीवसप्रभु वंदेरे। नाथावजपालसघसहितशुभ कृपाचद्रचिरनंदेरे श्री ॥११॥

॥ इति सिद्धाचलजी स्तवन सपूर्णम् ॥

॥अथ श्रीचितामणीपासजी स्तवनं प्रारंभ



श्रीचितामणीपासजीरे लोद्रवपुर राजान। दरसण वहिलो दीजियेरे सिवमंदिर सोपान,

जिनेसर सुणिये " अरदास ॥ १ ॥ सुरसपति कारक सदारे प्रमुदण जगमे देव । सुरनर पति त्रिहु कालमेरे सारे तुमतणी सेव ॥ जि सु ॥ २ ॥ वामानदन जगधणीरे तेवीसमो जिनचद । नील-वरण सुहकरे अदभुत ज्योतिदिणद ॥ जि सु ॥ ३ ॥ ऋषभ अजित सभव नमुरे सहसफणाजि नराय । समवसरण चोवीसनेरे करपवृक्ष रह्यो छाय जि सु ॥ ४ ॥ आसथरीने आवीयोरे विषम उलघी घाट । प्रभुपद पकज भेटीयारे सघसहित गहगाट जि सु ॥ ५ ॥ तारकतारो तातजीरे बिरुद एह दिलधार । कृपाचद्र अलवेशरे निश्रेय सदातार ॥ जिने ॥ सु ॥ ६ ॥

॥ इति श्रीचिंतामणीपासजी स्तवन सपूर्णम् ॥

अथ श्रीअयवंतीपासजी स्तवनं प्रारं

श्रीअयवतीपासजीरे तेवीसमा जिनचद दरसमरसमुजदीजियेर सिवसुखतरुनो कद जिणेसर दीजे दरिसन सुद्ध॥१॥ दुविध दरिसन जिनवर कह्योरे सुद्धासुद्ध विचार । सुद्ध दरिसणथी सपजेरे निश्चयसुचिव्यवहार जि दी ॥२॥ तुम मारिखा साहेब उतारे अवरतणी मी आ स । कल

वृक्ष पामी करीरे कुण करे बावल वास।जि दी ३
उगणीसै अडतालीसमेरे जेठ धवलबुधवार। दसमी
दिनप्रभु भेटीयारे कृपाचद्र सुखकार।जि दी ४

॥ इति श्रीअयवतीपासजी स्तवन सपूर्णम् ॥

॥ अथ श्रीचिंतामणीपासजी स्तवनं प्रारंभ ॥

सानी प्रभु वीनती एक मोरीरे ए देशी चिंतामणी वीनती अवधारोरे सेवकना वांछितसारो चिं प्रभुनामसुणीने आयोरे मुजमनमा हरख सवायोरे, दरसण देखी सुख पायो ॥ चि ॥ १ ॥ प्रभु छो त्रिभुवनना स्वामीरे मुज आतमना विसरामीरे तुम सेवा पुन्ये पामी ॥ चिं ॥ २ ॥ पूरव सुकृत मुज फलियारे भवभजन प्रभुजी मलियारे, दुःख दोहग सगलाटलिया ॥ चि ॥ ३ ॥ घणी विषम चलवी वाटरे पर्वतनदीयानाथाटरे, भेट्या सघसहित गहगाट ॥ चि ॥ ४ ॥ कच्छ माडवी नगर सुहावेरे नाथोवजपालकहावेरे, जिण जात्रा करावी भावे ॥ चि ॥ ५ ॥ उगणीसै पासठ वरसैरे सुदिमाघमासमनहरखेरे, पं [illegible]

प्रभु फरश ॥ चिं ॥ ६ ॥ प्रभुमुख पुनिमनो चदरे दीठा मुज आनद अमदरे. चित्तनतिप्रणमें रूपाचद्र ॥ चिं ॥ ७ ॥

॥ इति श्रीचितामणीपासजी स्तवन सपूर्णम् ॥

॥ अथ श्रीमगसीपार्श्वनाथ स्तवन प्रारभ ॥

श्रीमगसी पार्श्वसुखकार भविहादिकमलबोधन-दिनकार।श्री म। मालवमडल शोभावधार प्रभुदर सण वरसे जलधार ॥श्री॥ म ॥१॥ नीलवरण शुभ-द्युतिमनुहार कर्मकलुषमल दूर निवार। ध्याताजन मनगेहमझार बोधबीजगुणमणिदातार श्री म. २ कमठमहाशठमान विडार उरगअनुकपा करी सुवि-चार।वासवमेविनकमयुगनुसार पद्मावती करे नृत्य उदार॥श्री म ३ तु परमेश्वरपरमाधार परमजोति-चिद्रूप अविकार। सुरगुरुरसना सहस्रकरेवार तोहीनआवेतुजगुणपार ॥श्री म ॥४॥ धन्यदिवस आये हरखअपार पुन्यप्रबलप्रभुदीठो दीदार। जिनवचनामृतयुक्तिसुसार रूपाचद्रपदकज मधु-कार ॥ श्री ॥ म ॥ ५ ॥

॥ इति श्रीमगसीपार्श्वनाथ स्तवन सपूर्णम् ॥

॥ अथ श्रीमहावीर जिनेश्वर स्तवनं प्रारंभ ॥

हारेम्हारे वीरजिणंद मुलागो नवलो नेहजो । भीनउली नयणीरे अमीरस लोयणेरे लोय ॥ आकणी हारेमारेप्रभुजीनो मुखडो सोहे सारदचंदजो । मुजमनडो लोभाणो चकोर जिम जोयणेरे लोय ॥ १ ॥ हारेमारे त्रिभुवन नायकलायक श्री भगवंतजो त्रिसलानंदनवदन निसुणोवीनतीरे लोय ॥ हारेमारे भवभव भटकत आयो हूं तुम तीरजो । हिव सेवकने तारो प्रभु कहिये कतिरे लोय ॥ २ ॥ हारेमारे आगल पिण तुम तारया जननारूंदजो । अपराधि छतां माहिर नेडने उद्धयेरे लोय ॥ हारेमारे साहिबसुनिजर करी मुज जाणो न्यासजो । तुममाटे मेंदेव अवरन परिहरयारे लोय ॥ ३ ॥ हारेमारे भद्रेसरमा भेटया श्रीभगवानजो । देरासर सुखकारी दीठो मनहरूरे लोय ॥ हारेमारे उगणीसेवासठे फागुण मासजो । कृपाचन्द्र जिनपदकज प्रणम्या सुराकरूरे लोय ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीमहावीरजिनेश्वर स्तवन संपूर्णम् ॥

॥अथ श्रीआदिजिनेश्वर स्तवनं प्रारंभ॥



राग प्रभात-आदिजिणदा सुणअनुपमचदा आदि- मोह्या सह सुरनर मुनिइदा ॥ आदि ॥ आंकडी ॥ नित्योदय रहनो यथाछदा । मोहाधकारकु दूर करिंदा ॥ आदि ॥ १ ॥ रहने राहु ग्रह नहीं मदा । आच्छादन न करे वारिंदा ॥ आदि ॥ २ ॥ अद्भुत रहनी काति सोहदा । रह अपूर्व शशाक कहिंदा ॥ आदि ॥३॥ अनुभव अमृतवरसत चदा । भविक कुमुद मिलपान करिंदा ॥ आदि ॥४॥ हरख अधिक आज उदयोदिणदा । कृपाचद प्रभु चरणुदा नदा ॥ आदि ॥ ५ ॥

॥ इति श्रीआदिजिनेश्वर स्तवन सपूर्णम् ॥

॥अथ श्रीरिषभजिनेश्वर स्तवनं प्रारंभ॥



रिषभजिन म्हारे तुमसु प्रीत प्रीतबनीयादुरीत॥रि॥ म्हा ॥आकडी॥ सुगणसनेही साहिबोजी शेत्रुजगिरि सिणगार । खिणखिणमे मुजसाभरेजी सुदरतुम दीदार ॥ रि ॥ १ ॥ वदनकमल भानुचदलोजी का- मणगारा जोर । नयनतुमारा तीखडाजी चितडो- लीनो चोर ॥ रि ॥ २ ॥ तारक विरुद ए तुमतणोजी

सुणि आयो तुम पास । सुनिजकर सफलो करोजी पूरोमनडेरी आस ॥ रि ॥ ३ ॥ दीपसिखाजिमना-शिकाजी अष्टमिशसिसमभाल । गिणाति कहोकुण करी शकेजी तुम गुणगणनीमाल ॥ रि ॥ ॥ ४ ॥ यात्राकरीनक्षुरगसुजी प्रगट्यो हरख अपार । सघ-सहित प्रभुभेटियाजी कृपाचद्र सुखकार ॥ रि ॥५॥

॥ इति श्रीरिषभजिनेश्वर स्तवन सपूर्णम ॥

॥अथ श्रीआदिजिनेश्वर स्तवनं प्रारंभ॥



आदीसर अवधारो अरजी अमतणी हो राजके अरजी अमतणी ॥ ग ॥ आकणी ॥ सुनिजर धर प्रभुसेवा आपो तुमतणी हो राजके, आपा तुमतणी भव भवभ्रमण करता विपतसही घणी हो राजके, विपत सही घणी, सुगुरुपसाये प्रभु मिलिया अम-नेधणी हो राजके, मिलिया अमने धणी ॥ १ ॥ रागद्वेष दोय शत्रु मुजकेडे पड्या हो राजके, मुज केडे पड्या मोह भूपनी प्रबल आणा लेइ नड्या हो राजके, आणा लेइ नड्या प्रभुजीनो सुपसाय पामीने आथड्या हो राजके, पामीने आथड्या आतमगुणनी पुष्टीना कारण अड्या हो राजके, पुष्टीना कारण अड्या ॥ २ ॥ दीठो तुम दीदार

सफल दिन माहरो हो राजके, सफल दिन माहरो पूरव पुन्य प्रसादे ए जाण्यो खरो हो राजके, ऐ जाण्यो खरो देवल नहला जगमे दीठा देवता हो राजके, दीठा देवता तुमसम अवर न नीरख्यो जगमा सेवता हो राजके, जगमा सेवता ॥ ३ ॥ शेत्रुंजमंडन श्रीजगदीश्वर भेटीया हो राजके, दीश्वर भेटीया पूरव संचित पापकरम सहु मेटिया हो राजके, करम सहु मेटिया भवमाहित प्रभुयात्रा अतिरंगे करी हो राजके, अति रंगे करी नाथा वजपाल लाभ लीधो आनंद भरी हो राजके, लीधो आनंद भरी ॥ ४ ॥ परमकृपाल कृपानिधि बिरुध धरो सदा हो राजके, बिरुध धरो सदा तो तारं जगनाथ घणु कहीए कदा हो राजके, घणु कहि कदा सुभ उगणीसे पासठे फागुण मासमें हुं राजके, फागुण मासमे कृपापक्ष शुदि आठम भेट्या प्रहसमे हो राजके, भेट्या प्रहसमे ॥ ५ ॥

॥ इति श्रीआदिजिनेश्वर स्तवन संपूर्णम् ॥



॥ देशी भरतरीनी ॥

धर्मजिनेसर जगधणी त्रिभुवनपति मनुहारजी
भव्य हृदयकजदिनमणी सुव्रता मात मल्हारजी

धर्म० ॥ १ ॥ भानुकुलनभचद्रमा सुरतरु समाजिन-राजजी करुणा कर सहु जीवना मारे वंछितकाजजी ध० ॥२॥ भव अटवी भमता थका मिलियो नहीं काई साथजी अनंतकाल भसागरमां तेथी रखडयो नाथजी ध० ॥३॥ हिवमुजने प्रभुजी मल्या पूरवपून्य प्रमाणजी मनना मनोरथ सहु फल्या साहिबचतुर-सुजाणजी ध० ॥ ४ ॥ भगवति अगमविकजना निसुण्योभावविशालजी उपधान तप पूरण थयो पहरिमाल रसालजी ध० ॥ ५ ॥ समवसरण रचना रची भविमन हरख अपारजी जामनगर जुगते थयो उछवविविधप्रकारजी ध० ॥६॥ उगणीसैसह सठसमे माघमास सुधिचारजी सुदिपांचम जिन-सेवना कृपाचद्र सुखकारजी ध० ॥ ७ ॥

इति पद्म

धर्मजिनवर उपगारी चाहु सेवातुमारी ए आंकणी धर्म जिनेसर जग अलवेसर महिमासुनके तिहारी आसविलुधोदरससरसकु आयो हु निरधारी धर्म ॥ १ ॥ अवर देव दीठा बहु जगमें ते सब है सविकारी देवनिरंजन नाथ निहार्यो, त्रिभुवनमें अविकारी धर्म० ॥ २ ॥ तीन लोकमें देवनगीमो बीजो नही अधिकारी करुणानिधि करुणा

साहिब यो निज गुण निरधारी ध० ॥ ३ ॥ रागद्वेष मुजकेडे पडिया । देत महा दुख भारी वीतराग प्रभु नाम धरावो ताते करिये पुकारी ध० ॥ ४ ॥ सुरासपतिकारक भववारक सेवकजननिस्तारी समवसरणमे चौमुख जिनवर कृपाचंद्र सुखकारी ध० ॥ ५ ॥

इति पदम्

"भविया भाव धरीने भेटो भगवाननेरे, प्रभुजी तारे सारे वंछित देव रसीया धर्म जीनेसर गुणगायो रगसुरे ग्वी सुरनर पति करे सेव भ ॥ १ ॥ पनरम जीनवर सेविये धर्म धुरधर स्याम धर्मनाथ जीनराजजी पुरे वंछित काम गोडी पारसनाथ प्रणमो सोहामणारे ग्तो बीजी भूमीविय विशेष भ ॥ २ ॥ नेमजिनेसर वालहो ब्रह्मचारि गिरदार स्याम वरण छवि सुदरू भविजनने सुखकार प्रभुनो परचोचिह्न दिशि परगटरे वलि बारमा वासुपूजजाण भ ॥३॥ शांतिजीनेसर सोलमा शांतिसणा करनार नेमनाथ चवरी भली सभय चोमु ख्सार एनो देरासर दीठा दोय सोहामणारे दीपे बावन देहरा विशाल भ ॥४॥ बारम जीनवर सेविये वासुपूज महाराज बीजो देहरो

शातिनाथनो मानु नवीन रचो आज !
आदीसरनो दीठो अदभुत देहरोरे वली चन्द्राप्रभु
चैत्र नवीन (न० ॥५॥ अजित जिनंद जुहारिये
अलिविघन सहुजाय मुनिसुव्रत जिन थीसमा
दादा देहरी कहाय वडे माहे प्रथम जिन
भेटीयारे एतो चैत्य प्रवाडी उछरग भ ॥६॥
समवसरणमे शोभता चौमुख श्रीजिनचन्द
भविजनना मन मोहता सेवे सुरनर इद जामगन-
रमां उछरग वधामणारे हरखे मिलिने नरनारि
गुण गाय भ ॥ ७ ॥ भगवती भावे सांभली
उपधान वद्योचिनचद" कस्तुर परमुख भविकजन
पहरी माल मनरग देश विदेशना आवे वहु
जानरीरे वरत्यो कृपाचन्द आनन्द जय जयकार॰
भ. ॥८॥ इति पद

सझाय लिख्यते ॥

क्रोध मकरसो भोला प्राणियारे । क्रोधथी
थाये क्रोड कलेसरे । आधि व्याधि वधे घणीरे ।
धर्मनो रहे नहिं लव लेसरे ॥ १ ॥ वहुकाले जे तप
जप आदरे रे । क्रोधथी खिणमा खेम थायरे । कु-
णाला नगरीना मुनि जाणिये रे । क्रोधथी दुरग-
तिमां ते जायरे ॥ २ ॥ क्षण क्षणमा जे क्रोध

सुनिरे । पाप श्रवण ते कहिवायरे । शिष्यना ऊपर क्रोध करी थयोरे । चउकाशियो कह्यो जिनरायरे ॥ ३ ॥ पोतानो आतमगुण घाले सहिरे । पछे परनो घर घालतरे । अग्नि समान जाणो तुम क्रोधनेरे । जे त्यागे ते मोटा सन्तरे ॥४॥ अनन्तानुबन्धादिक चउ भेदथीरे । ते लहे दरशन आदि समृद्धिरे । सूरिकृपाचन्द कहे धारज्योरे । क्षमाथी पामे अविचल रिद्धरे ।

इति सम्पूर्ण ॥

॥ अथ द्वितीय कषाय लिख्यते ॥



मानव भव पामी करी जी । विनय करो निशिदीस । मान महा गज टालवाजी । भाग्य श्री जगदीस । चतुर नर मेलो माननी वात । जिम थाय सुख सात । च० मे० ॥ १ ॥ मोह महाराजा तणो जी । मान ए अगज जाण । जाति मदादिक एहना जी । परिकर जाणो सुजाण ॥ च० मे० ॥ २ ॥ मान तणे वस जे पड्या जी । तेह रज्झड्या संसार । मान त्यागथी बाहुबली जी । पाया केवल सार ॥ च० ॥ मे० ॥ ३ ॥ विनयथी विद्या ऊपजे जी । ․ लहे सुखकार । चरित्र पाले निरमलो

जी । पोहचे मुक्ति मझार ॥ च० ॥ मे० ॥ ४ ॥ रावण राज गमावीयो जी । दुर्योधन दुरलीन । प्रतिविष्णु नरके गयाजी । माननी सगति कीन ॥ च० ॥ मे०॥ ५ ॥ विनय मूल जिन धर्मनो जी । भाख्यो श्री जिनराज सूरि कृपाचंद गुणसेवेजी । विनय जाणो सिरताज ॥ च० ॥ मे० ॥ ६ ॥

इति मानसझाय ॥

॥ अथ मायानी सझाय लिख्यते ॥



॥ माया वीषवेली । २ । एतो दे दुरगतिमां ठेली । माया विषवेली० ॥ ए आंकडी ॥ माया वेलडी मनमा उगी । आर्यवकीले उखेली ॥ १ ॥ मायावि० ॥ माया काया जगमें झूठी ममता माहि रुहेली ॥ २ ॥ माया० ॥ कपट दपट करि लोकने धूते । बहु रूपे भर मेली ॥ माया० ॥ ३ ॥ आषाढ भूति ये माया मूकी । लही सिव पदनी सेली ॥ माया० ॥ ४ ॥ मल्लि जिनेश्वर पूर्व भवम मित्रथी माया करेली ॥ माया० ॥ ५ ॥ स्त्रीतीर्थंकर पाम्या तेहथी । उत्तम गुण गण मेली ॥ माया० ॥ ६ ॥ धूतारा बहु माया करके धुते जग जन हेली ॥ माया० ॥ ७ ॥ माया त्याग करो गुरु संगे ।

कृपाचंद्र सुख सेली ॥ माया० ॥८॥ इति मायानी सज्झाय ॥

॥ अथ लोभनी सझाय लिख्यते ॥



॥ राग भर्तरि ॥ लोभ तजो भवि प्राणिया लोभे सव गुण जावे लोभे सुख नवि हुवे कदा तो किम निज गुण पावे ॥ लो० ॥ १ ॥ सागर सेठ धन लोभीयो नरक गयो निरधार म मण तिम बहुला जन थया दुरगतिना भरतार ॥ लो० ॥ २ ॥ सुभुम चक्री साधन भणी लोभ पिशाच ग्रहाणो सप्त समुद्रमा बुडीया थयो नरकनो राणो ॥ लो० ॥ ३ ॥ सुक्ष्म लोभ जिहा लग शिव सुख अभिलाषा लोभ शत्रु दूरे करी केवलज्ञान प्रकाश

॥ अथ दीवालिनी सज्झाय लिख्यते ॥



॥ हारे मारे ठाम धर्मना साढा पचवीश देश जो ॥ ए देशी ॥ हारे मारे दीवालि दिन आव्यो मजनी जाणजो । वीरजिनेश्वर अतिम चउमासी रह्यार लो ॥ १ ॥ हारे मारे पावापुरीमां वसीया त्रिभुवन नाथ जो । सोले पहेर लगे देशना दीधी सुमकरूरे लो ॥ २ ॥ हारे मारे पुन्यपालराजा पूछे सुहगाना अर्थ जो । भावी फलरूयो पचम आरानो महीरे लो ॥ ३ ॥ हारे मारे गौतम स्वामीने मुक्या पामन काज जो । अमावसनी रजनी ये प्रभुसिवनर्वाण लो ॥ ४ ॥ हारे मारे चोसठ सुरपति आव्या तनत्रिणनामजो । कल्याणक निर्वाणनो उच्छव मोकशु रे लो ॥ ५ ॥ हारे मारे पाछावलता गौतम जाण्यो निर्वाणजो । वज्राहन परे मुछित थइ जाग्रत थयारे लो ॥ ६ ॥ हारे मारे विविध विलापकरे श्रीगौतम स्वामी जो । वीतराग थई केवललब्धि पामीयारे लो ॥ ७ ॥ हारे मारे काशी कोसल देश तणागणराय जो । अढार मिलि पोसह विधिशु आदर्यारे लो ॥ ८ ॥ हारे मारे भाव उद्योत गया थका द्रव्य उद्योत जो । रयण सुकीने दीवाळि करी तिन समेरे लो ॥ ९ ॥ हारे

कृपाचंद्र सुख सेली ॥ माया० ॥८॥ इति मायानी सज्झाय ॥



॥ अथ लोभनी सज्झाय लिख्यते ॥

॥ राग भैरवि ॥ लोभ तजो भवि प्राणिया लोभे सव गुण जावे लोभे सुख नवि हवे सदा तो किम निज गुण पाव ॥ लो० ॥ १ ॥ सागर सेठ बहु लोभीयो नरक गयो निरधार मम्मण तिम बहुलाजन थया दुरगतिना भरतार ॥ लो० ॥ २ ॥ सुभुम चक्री साधन भणी लोभ दिशाच्य प्रहाणो सप्त समुद्रमा बुडीया थयो नरकनो राणो ॥ लो० ॥ ३ ॥ सुक्षम लोभ जिहा लग शिव सुख अभिलाषा लोभ शत्रु दूरे करी केवलज्ञान प्रकाशा ॥ लो० ॥ ४ ॥ च्यार भद लोभना कह्या जिणगणधर देव तेहतजी लहे धर्म थकी निज गुणने सेव ॥ लो० ॥ ५ ॥ च्यार कषाय निवारवा कषाय गजण तप कीजे कृपाचंद्रसूरि इम भणे वंछित फल लीजे ॥ लो० ॥ ६ ॥ इति लोभ सज्झाय ॥

॥ अथ दीवालिनी सज्झाय लिख्यते ॥



॥ हारे मारे ठाम धर्मना साढा पचवीश देश जो ॥ ए देशी ॥ हारे मारे दीवालि दिन आव्यो सजनी जाणजो । वीरजिनेश्वर अंतिम चउमासी रह्यार लो ॥ १ ॥ हारे मारे पावापुरीमां वसीया त्रिभुवन नाथ जो । सोले पहेर लगे देशना दीधी सुपरकरे लो ॥ २ ॥ हारे मारे पुन्यपालराजा पूछे सुहणानो अर्थ जो । भावी फलकह्यो पचम आरानो मर्हारे लो ॥ ३ ॥ हारे मारे गौतम स्वामीने सुरगुरु पोहन काज जो । अमावसनी रजनी ये प्रभुसिव-वर्यारे लो ॥ ४ ॥ हारे मारे चोसठ सुरपति आव्या तनगिणनामनो । कल्याणक निर्वाणनो अच्छर मोकशु रे लो ॥ ५ ॥ हारे मारे पाछावलता गौतम जाण्यो निर्वाणजो । वज्राहत परे मुर्छित थई जागृत थयारे लो ॥ ६ ॥ हारे मारे विविध विलापकरे श्रीगौतम स्वामी जो । वीतराग थई केवललब्धि पामीयारे लो ॥७॥ हारे मारे काशी कोसल देश तणागणराय जो । अढार मिलि पोसह विधिशु आदर्यारे लो ॥ ८ ॥ हारे मारे भाव उद्योत गया थकां द्रव्य उद्योत जो । रयण मुकीने दीवालि करी तिन समेरे लो ॥ ९ ॥ हारे

मारे गौतम केवल महिमा रे इद्रजो । भाइ बीज जमाडयो येहनी ये भाइने रे लो ॥ १० ॥ हारे मारे दीवालि नो उठकरी चौविहारजो । सोळ पहोरनो पोसहतप आराधियेरे लो ॥ ११ ॥ हार मारे गुणनो करी परभाते मगल काजजो । गौतम स्वामीनु एकासणो करे भावशु रे लो ॥ १२ ॥ दीवाली पर्व लोकोत्तर लोकीकजो । परसिध थयो कार्तिकवदी अमावसे रे लो ॥ १३ ॥ हार मारे पर्वाराधन करी भवि मनउलग जो । जिनकृपाचद्रसूरि कहे सुख सपति घरोरे लो ॥ १४ ॥ हारे मारे० ॥ इति दीवाली सज्झाय ॥

॥ अथ बीजनु चैत्यवंदन लिख्यते ॥

॥ द्विविध धर्म जिनवर कहो । साधु श्रावक नो जाण । शिक्षा दोय सेवो सदा । ग्रहणा सवन आण ॥ १ ॥ धर्म शुक्ल दुग ध्यान ने ध्यावो चतुर सुजाण । आर्त रौद्र दोय परिहरो । त्रिकरण शुचि महिरान ॥ २ ॥ अभिनदन जनम्या प्रभु । सुमति अर चविया । वासु पूज्य थया केवली । शीतल शिव सुख वरिया ॥ ३ ॥ सीमधर युगमधरा । वीस विहर मान होय । राग द्वेषनो त्याग करी ।

निश्चय व्यवहार जोय ॥ ४ ॥ बीज दिवस आरा-
धिये ए। ज्ञान तिथी सुविहाण। सूरिकृपाचन्द्र
सिरतां। तपथी कोड कल्याण ॥ ५ ॥

॥ इति बीजतिथीनो चैत्य वदन संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्रीपंचमी चैत्यवंदन ॥

॥ पांच ज्ञान प्रगटायवा। पंचमी तप सुप्रधान।
आराधो भवि इकमने। प्रगटे ज्ञान निधान ॥ १ ॥
अवग्रहादिक जाणिये मति अठावीश सार चवद
वीश भेद श्रुततणा। अवधि ज असंख्य प्रकार ॥
२ ॥ मनःपर्यव दुग भेद छे। केवल सकल प्रकाश।
लोकालोक स्वरूपनो। ज्ञायक ज्ञान ए खास ॥३॥
सर्वाराधक ज्ञानने। भाख्यो श्री जगदीश। मा-
सोपवासमा कर्मनो क्षयकरे विशवावीश ॥ ४ ॥
लघु मध्यम उत्कृष्ट पंच। मास वरिस जावजीव।
विधि पूर्वक आराधता। पामे ज्ञानसदीव ॥ ५ ॥
दोयपरोक्ष प्रत्यक्षतीन। श्रुत उपगारी जाण।
सूरिकृपाचन्द्र प्रणमता लहिये निर्मल नाण ॥ ६ ॥
इति पंचमी चैत्यवदन संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री पचमाथुइ लिख्यते ॥

॥ श्रीनेमि पचरूपत्रिदशपतिकृतमाज्यज
न्माभिषेक । चचत्पच।क्षमत्तद्विरदमदभिदा पच
वक्त्रोपमान । निर्मुक्त पचदेह्या परमसुखमपा
स्तकर्म प्रपन्न । कल्याण पचमी मत्तपसि वितनुता
पचम ज्ञानवान च ॥ १ ॥ समीणान् सघकारान
शिवतिलक सम कौशिकानदमूर्ति । पुण्या थि
प्रीतिदायी सितरुचिरिव य स्वीयगोभिस्तमांसि
सान्द्राणि घ्नममानः सकल कुवलयोल्लास मुच
श्चकार। ज्ञान पुण्यात् जिनौघ सत
सतपसि भावना पचमीनामरस्य ॥ २ ॥ पीत्वा
नानाभिधार्थां मृतरसममम याति यास्यति जग्मु
जीवा यस्मादनेके विधि नदमरना प्राजनिर्वाण
पुर्याम्। यात्रा दैवाधिदेवागमदर्शन सुधा कुरु
मानद हेतु। स्तत्पचम्या स्नपस्युग्मत विशदधिय
भवीनामस्तु नित्य ॥ ३ ॥ स्वर्णालकार वरगरमा
किरण गणध्वस्त नित्यायकारा । हुकारा गावदृ
कृत सुकृत जनव्रातविघ्न प्रचारा । देवी श्री
अचिक्राख्या जिनवर चरणाभोज भृगी समाना
पचम्यन्ह स्तपोर्थं वितरतु कुशल धीमता सावधा
॥ ४ ॥ ॥ इति थुइ सपूर्णम्

।अथ अष्टमिनुं चैत्यवंदन लिख्यते।।

॥आठमदिन आराधिये। प्रवचन माता सार। अष्टसिद्धि आपे सदा। कापे कुमति कुठार ॥ १ ॥ आठमद निवारिने। अष्टकर्म करि अंत। श्रावण सुदि आठम दिने। पासजी लह्या भव अंत ॥२॥ भादरवा वदि आठमे। सुपास चव्या जग भाण। माघ सुदि जनम्या अजित फागन संभव चव्या जाण ॥ ३ ॥ चैतर वदि आठम रिषभ। जन्म दीक्षा बे जाण। वैसाखसित अष्टमी। अभिनंदन निर्वाण ॥ ४ ॥ एहिज तिथी जनम्या सुमति। जेठ वदि मुनि' सुव्रत। आषाढ सुदि आठमें। नेमि जिनेसर निर्वृत ॥ ५ ॥ श्रावण वदि आठम दिने। नमि जनम्या जिन जाण। पोसह करो आठपहेरनो। जिम लहो गुण मणि खाण ॥ ६ ॥ अष्टमी इम आराधिये। त्रिकरण करि इकठोर। कृपाचंद्रसूरि भवितणा। तूटे कर्म कठोर ॥ ७ ॥

॥ इति अष्टमी चैत्यवंदन ॥

॥अथ एकादशीनु चैत्यवंदन लिख्यते।

॥ श्रीमल्लि त्रिभुवन धणी। जन्म दीक्षाने ज्ञान। कल्याणकएकादशी। मगसर शुदि मन आण ॥ १ ॥ अर पारस दीक्षाग्रही एकादशी दिन जाण। रिषभ अजित सुमति नमि पामे केवलज्ञान ॥ २ ॥ पद्मप्रभु सिवपुर लह्यो एकादशी अतिरूडी। इग्यारे अग आराधवा ए तिथी नहीं कूडी ॥ ३ ॥ इग्यारे गणधर थया द्वादशअगरचनार। कृपाचन्द्रसूरि सेवता। पां भवनो पार ॥ ४ ॥ इति एकादशी चैत्यवदन।

॥ अथ १० शीतलजिन चैत्यवदन लिख्यते ॥

॥ शीतल जिनपति जगतिलो। साति सुधा-रस सार। अतर ताप बुझायवा। प्रभु दरसण जलधार ॥ १ ॥ सुग्रीव कुलनभ दिनमणि। नदा मात सुजात। तीन भुवन तारण तरण। प्रभुजी छो विख्यात ॥ २ ॥ अतर वैरी नमायवा। नमि सेवो जगदीश। पारस फरसन तें हुवे। पावन

विमना गेश ॥ २ ॥ उगणीसे तेहोत्तर बुहारी आपार इंश । प्रभुपद पंकजमां नमें ॥ कृपाचंद्र सूरीश ॥ ३ ॥ इति १० शीतल जिन चैत्यवंदन ॥

॥अथ १२ वासु पुज्य जिन चैत्य वंदन लिख्यते ॥

॥ बारम जिनवर वंदिये । वासु पुज्य जिनचन्द । रक्तवरण द्युति सुंदरू । मोहे सुर नर वृंद ॥ १ ॥ सित्तर धनुपनी देहडी लाख बहुत्तर आय । त्रिकरण जोगे आराधना । निजगुण निर्मल थाय ॥ २ ॥ देरासर भलो दीपतो ए ॥ बुहारी नगर मझार । सूरिकृपाचंद्र सेवतां । पामे जग जयकार ॥ ३ ॥ इति श्रीवासुपूज्य जिन चैत्यवंदन संपूर्ण ॥

॥ अथ पर्युषण पर्वनो चैत्य वंदन लिख्यते ॥

॥ श्रीवीरजिनेश्वर भाखियो पर्वोमां सिरदार । रत्नोमां चिंतामणि । गिरिमां शत्रुंजय सार॥ १ ॥ लौकिक लोकोत्तर वलि । पर्व घणा दिल धार । पजुषण सम को नहीं । बोल्या शास्त्र मझार

नदीसर दीपे जइ । उच्छव करे सुर राज । तिम श्रावक आराधता । सारे वांछित काज ॥ ६ ॥ आस्रव कषाय निवारिने । सामायक करो शुद्ध । जिन पूजा पर भावना । करिने तरो भव युद्ध ॥ ७ ॥ कल्पसूत्र सुणो इक मना । मवच्छरी पडि क्कमिये कृपाचन्द्रसूर सेवता भवमा नवि भमिये ॥ ९ ॥ इति श्रीपजुषण पर्वनो चैत्य वदन सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ श्री दीपमालिका चैत्य वंदन लिख्यते ॥

॥ जय जय श्री जिनवर्द्धमान । मोवन सम वान । सिंह लछन सिद्धार्थराय त्रिशला सुत भान ॥ १ ॥ वरस बहुत्तर आऊ देह कर सत्त प्रमाण । रिषभादिक सम जास वंस । इक्ष्वाग सम जाण ॥ २ ॥ छठ भत्त सजम लियो । कुंडग्राम पुर ठाम । गणधर इग्यारे सहित । पायो शिव पुर स्वाम ॥ ३ ॥ चवद सहस मुनि स्वामी सीस । छत्तीस सहस । श्रमणी श्रावक एक लाख । गुण सट्सहस ॥ ४ ॥ तीन लाख श्राविका वली । सहस अढार । सुर मातंग सिद्धायिका । नित सानिधकार, ॥ ५ ॥ एकाकी पावा पुरीए । उठ

मक्त सुजाण । प्रभु पोहता अमृतपदे । करो सघ कल्याण ॥६॥ इति श्रीदीपमालिका चैत्यवंदन ॥

॥ अथ द्वितीयदीवालीनो चैत्यवंदन लिख्यते ॥

॥ सिद्धार्थ कुल दिनमणि । त्रिसलानो जायो । अंतिम चोमासी प्रभु । पावा पुरी आयो ॥ १ ॥ कातिवदि अमावसे । सोल पहोर परसिद्ध । देशना दीधी वीर जिन । अनुपम सिव सुख लीद्ध ॥ २ ॥ गौतम स्वामीने ऊपनो । केवल ज्ञान उदार । दीवाली परभातमां । सहु कधो सुखकार ॥ ३ ॥ भाइ बीजनो पर्व थयो । सोक निवारण काज । दीवाली आराधता सारे वंछित काज ॥ ४ ॥ छठ कॉर गुणनो करो । चाढो नैवेद्सार । क्रुपाचंद्रसूरि सेवतां । पामे भवनोपार ॥ ५ ॥

॥ इति श्रीदीवालीचैत्यवंदन संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्रीपजुषणपर्वनी थुइ लिख्यते ॥

॥ वीर जिनेसर जग अलवेसर । राजग्रही समोसरिया जी, पर्व पजुषण इण परि भाखे । चउविह संघ परिवरिया जी, आषाढ चोमासाथी पचाश दिननी संख्या जाणो जी । संघछरी पडिक्कमणो करिने आतम निजघर आणो जी ॥१॥ दोय राता दोय धोला जिनपति । दोय काला दोय नीलाजी, लाछन वरण प्रमाण सुसोभित । सोले जिनवर पीलाजी । सतरे भेदी पुजा करिने । चैत्यपरवाडी करी जे जी । परवपजुपण पुरव पुन्ये । पाम्या लाभ जाणी जे जी ॥ २ ॥ कल्पसूत्र निज घर पधरावी । रात्रि जागो तिहा कीजे जी । वरघोडो भलि संघ मलिने । सदगुरुने आणी दीजे जी । नव व्याखे तेरे वायण । सुणिने दुरगति वारो जी । पुजा प्रभावना सद्गुरु भक्ति । करिने जन्म सुधारो जी ॥ ३ ॥ साहमीवच्छल करिये भावे । वार वार उजमता जी । केइ सीयल तप सयम पाले । भाव अधिक उलसता जी । आठ दिवस पजुषण सेवो । जिम सेवे सुरइंदाजी । सुपदेवी सुपसाये भाखे जिन कृपाचंद सूरिंदा जी ॥ ४ ॥ इति श्री पजुषण पर्वनी थुइ संपूर्ण ॥

अथ नवपदजीनो चैत्यवंदन लि॰ ॥

श्रीअरिहंत ना बार गुण सिद्धना आठ कहाय ॥ छत्तीश गुण सूरितणा । पचवीशकरया उवज्झाय ॥ १ ॥ मुनिवरगुण सत्तावीस छै । दरशण सडसठ जोग । ज्ञान इकावन भेद छै । चारित्र सित्तर होय ॥ २ ॥ तप पचाश गुण जाणिये । नवपदना श्रीकार ॥ एकदर सहुध्याइये । त्रणसैछ पालीश सार ॥ ३ ॥ आंबिलकरि आराधिये । नव ओली सुजगीश । त्रिकरण योगेध्यावतां । जिनकृपाचन्द्र सूरीश ॥ ४ ॥ इति ॥

अथ नव पद वृद्ध स्तवन ॥

(दुहा) अरिहंतादिक पद तणो । ध्यान धरि मनमांहि सिद्ध चक्र गुणवरणवु त्रिकरण धरिउछाहि ॥ १ ॥ राजग्रही नयरी भली । समवसर्या गणधार ॥ सिद्धचक्रगुण वरणव्या ते सुण जो अधिकार ॥ २ ॥ (ढाल पहली) जग जीवन जगवालहो ॥ एदेशी श्री गौतम गणेसरु । यभणे भावि सुखकारलालरे । श्रेणिक पमुहा सांभले । उत्तम धर्म विचार ला० श्री० ॥ ३

दुर्लभ मानुष्य भव लह्यो। सेवो श्री जिन धर्म ला० दानादिक चउभेदथी। आराधिलह्यो शर्म ला० श्री० ॥४॥ भावविना जे दान छे। मिथसुग्व तेहथी न थाय ला० सीपल ते निष्फल लोकमां। भाव विना कहिवाय ला० श्री ॥५॥ भाव थीगुणो तपसह्यो। भव विस्तारणहेतु ला० दानादिक भावे-भिन्या। भव सायरना सेतु ला० श्री० ॥ ६॥ भाव मनो विषयिकथो आलयन मन आण ला० आलयन मह जातिना। नवपदमनमा आण ला० श्री० ॥ ७ ॥ अरिहत सिद्ध आचारज। उवझाय साधुपचाण लालर दर्शन ज्ञान चारित्रपलि। तप ए नवपद जाण ला० श्री० ॥८॥ ढाल नमरी ॥ भरतरीनी ॥ देशी ॥ नवपद ध्यावो भविजना। त्रिकरण करिद्दस्तारजी ॥ गौतमस्वामि उपदिसे श्रेणिकनरपतिसारजी ॥ न० ॥ ९ ॥ अठार दोष दूर करया। केवल ज्ञान प्रकाशजी ॥ देवदानवपति प्रणमता। प्रगट करे तत्व स्वामजी न० ॥ १० ॥ एवा श्री अरिहनने। ध्यावोचतुर सुजाणजी ॥ भाव सहित आराधता। सिवसुखलहोमहिराणजी न० ॥ ११ ॥ पनर भेद प्रसिद्धछे। कर्म रहित सुखदायजी ॥ सिद्ध अनत चतुष्कता। ध्यावो पजायजी न०॥१२॥ पचाचारने पालता परउ-, प्रधानजी ॥ शुद्ध सिद्धात वखाणता आचा-

रजश्रुतव्यानजी न० ॥१३॥ गणतृप्ति करता भला। सूत्र अर्थनादानजी । शिष्यादिकने आपता। नमोउवज्झायसुजानजी ॥ १४ ॥ कर्म भूमिमां विचरता । रत्नत्रयनाधारजी ॥ सुमति गुपति सुमिपालता । निकषाया सुविचारजी न० ॥ १५ ॥ जिन प्रणीत जेसास्त्रमां । तत्व सद्दहण स्वरूपजी दरशन रयण प्रदीपने । धारोचितमा अनूपजी न० ॥ १६ ॥ जीवादिक पदार्थनो। बोध स्वरूप विचारजी विनयकरि सीखोसदा । नाणछे सर्व आधारजी न० ॥ १७ ॥ अशुभक्रियानो त्याग छे। सुभ किरिया अप्रमादजी ॥ उत्तम गुण निरुक्तथी। लहो-चरणनो स्वादजी न० ॥ १८ ॥ सघन करमत महरणकु । भानुसमोतप जाणजी ॥ कषाय रहित बारभेदछे। तप पद मनमा आणजीन० ॥ १९ ॥ (ढाल) तीजी ॥ कपूर हुवे अति उजलो जी ए देशी । ए नवपद जिनधर्मनोजी सारभूत कहिवाय सिव सुखनो कारक सहीजी आराधो गुरु सहाय भविक जन सेवो जिन उपदेश पभणे प्रथम गणेश भ० ॥ २० ॥ ए नवपदथी नीपजैजी सिद्धचक्र यत्रराज आराधीने सुखलह्योजी जिम श्रीपालमाहाराज भ० से० ॥ २१ ॥ तव पूछे मगधे-सरुजी कुण श्रीपालनरेश किमआराधिसुख-पामीयोजी करुणा करो गणेश भ० से० ॥ २२ ॥

गौतमस्वामि उपदिशेजी निसुणो श्रेणिक राजान चंपानगरीनो राजीयोजी श्रीपाल नाम सुजाण भ० से० ॥ २३ ॥ उत्तर रोगे पीडीयोजी परणि राजकुमारी उज्जयणीमा जुहारियाजी रीषभेश्वर मनुहारी भ० से० ॥२४॥ मुनिचद्रगुरु उपदेशथीजी आराध्यो सिद्धचक्र रोगगयो वलिसुख लह्योजी सपदा पामी जिमशक्र भ० से० ॥ २५ ॥ नव पद ओलीआंबिलतणीजी नवराणीने साथ उजमणो पूरण हुवाजी करि खरच्यो घणो आथ भ० से० ॥ २६ ॥ नवपडिमादेरासनजी नव जीरणउद्धार पहिलो पद आराधियोजी नव पूजा मनुहार भ० से० ॥ २७ ॥ इम नव पद विस्तारथीजी पूजी लह्यो सुखसार आयु पूरण करि ध्यानशेजी नवमे स्वर्ग अवतार भ० से० ॥ २८ ॥ इम श्रीपालना भव थकी जी नवमे भव सहुसार निरुपम शिव सुख पामसे जी कहे गौतम गणधार भ० से० ॥ २९ ॥ श्रेणिक सुणि हरखित थयो जी प्रभुजीना वांद्या पाय । वीरजिनसर इम भणे जी सुण श्रेणिक नरराय भ० स ॥ ३० ॥ एक एक पद आराधताजी केई पाम्या भव अत नव पद ते निज आतमाजी ध्याता ध्येय महन्त भ० से० ॥ ३१ ॥ तीर्थंकर पद पामस्येजी तुहणमरतमझार इम साभलि नृप आनदियोजी निज घरपोतो सुखकार

न० से० ॥ ३१ ॥ कलश ॥ इम वीर जिनवर भुवन दिनयर नवपद महिमावरणव्यो सुरतरुदररहि चौमासो सिद्धचक्र गुण गणस्तव्यो संवत उगणीसे पणोत्तर आश्विन शुदि सातमदिने जिनकृपाचन्द्र सूरि पभणे वर्तो मंगल प्रतिदिने ॥ ३२ ॥

॥ इति नवपद वृद्ध स्तवनम् ॥



अथ दूजनो स्तवनम् ॥



(दूहा) वर्द्धमान जिन वंदिये त्रिशलानंदन देव सिंहलछन भवितसदा सुरपतिसारे सेव ॥ १ ॥ जन्मसमेथी जग गुरु अतुलबलि वड वीर तप उत्तम विधियुत कह्यो जल निधि जिम गंभीर ॥ २ ॥ (ढाल पहली ॥) कृपानाथ मुझ वीनती अवधार ॥ ए देशी ॥ धर्म करो जिनराजनोजी आणी उल्लट भाव दोय भेदे आराधताजी पामो आत्म स्वभाव भविक जनसेवो श्री जिनवाणी निजगुण मणिनी खाणी ॥ भ० ॥ १ ॥ तिथी आराधन फलतणोजी सास्त्र माहे अधिकार बीज आराधो भवि जनाजी तप किरिया विधिसार ॥ भ० ॥ २ ॥ दोयमासलघु दूजनेजी जाव जीव उत्कृष्ट दोय वरस दोय मासनीजी करो बीज सुभ इष्ट ॥ भ० ॥ ३ ॥ पडिकमणा

दकनाजी देव वदन निरधार विधिसेतीफल नीपजेजी पामे भवनोपार ॥ भ० ॥ ४ ॥ बीज दिवसनो सहु जुवेजी चद्रोदय सुप्रसिद्ध वधति कला तिम जाणजोजी धर्मथी वाछित सिद्ध ॥ भ० ॥ ५ ॥ दुविध धर्म जीनवर करोजी देशने सर्व विरत धर्म शुकेल दोय ध्यानमाजी होय सदा निरत ॥ भ० ॥ ६ ॥ अर्थ प्रकासे जिनवरजी सूत्र रचे गणधार विद्द सेवे वाचय मीजी द्वादश अग विचार ॥ भ० ॥ ७ ॥ (ढाल दूसरी) ॥ नमोरे २ सेत्रुजगिरीरे ॥ ए देशी बीज दीवसमा जानीयेरे कल्याणक सुविसालरे श्रावण सुदि बीजे चव्योरे सुमतिनाथ दयालरे नमोरे २ जिन चद्रनेरे ॥१॥ माध मासनी ऊजलीरे बीज दिवसमा जाणरे अभिनदन जन्म्या प्रभुरे त्रिहु जगना महिराणरे ॥ नमोरे० ॥ २ ॥ ए बीज तिथी वासपूज्यजीरे पाम्यो केवल ज्ञानरे फागुण सुदि बीजे जानीयेजी अरनाथ चवन सुजाणरे ॥ मोरे० ॥ ३ ॥ समेतसिखर पर सिव वर्योरे सीतल जिनवर नाणरे चैतवदि बीज सुदररे अविचल सुख मन आणरे ॥ नमो० ॥ ४ ॥ इम कल्याणक इन तिथीरे काल अनते होयरे अणत कल्याणक जाणजोरे एह आगम विधि जोयरे ॥

नमो० ॥ ५ ॥ तप पूणर हूवा थकारे उजमणो सुविवेकरे रत्नत्रय आराधवारे धन खरचो बहुलेकरे ॥नमो० ॥ ६ ॥ सीमधरादि जिनवरारे विहरमान जिनवीसरे मनमदिरमा आवजोरे जिन कृपाचद्रसूरिसरे ॥ नमो० ॥ ७ ॥

॥ इति बीजका स्तवन सपूर्णम् ॥



अथ आठमका स्तवन ॥



॥ दुहा ॥ वर्द्धमान जिनवर नमुं। समरी सार दमाय ॥ अष्टमी तपविधिवरणवुं । आगमयुत मपदाय ॥ १ ॥ आठमतिथी आराधना । भाखे । त्रिजगभाण ॥ विधिसेतीतप कीजीये । पामे उत्तम नाण ॥ २ ॥ (ढाल पहली) सभव जिनवर वीनति ॥ एदेशी ॥ आठम तप आराधिये । अष्टमी गतिदातारोरे ॥ प्रवचन माता आठने । पालोनिसदिन मारोरे । आठम ॥ १ ॥ अष्ट सिद्धि कारक सदा आठमतप उज्मतारे ॥ सामायक पोसहकरि । पर्व तिथी सेवतारे ॥ आठम ॥ २ ॥ पर्व तिथीमां बधाय छे । प्रायेपरभव आयुरे ॥ तिणकारण तिथीतपकरो । आगम माहि गवायोरे ॥ आठम ॥ ३ ॥ वृहदावस्यक वृत्तिमां

हरिभद्र सूरि बोलेरे ॥ तिम चूर्णि लघुवृत्तिमा ।
योग शास्त्रमा खोलेरे ॥ आठम ॥ ४ ॥ नवपद
प्रकरण वृत्तिमा । दिन कृत्य देवींद्रसूरिरे ॥ विधि
प्रपा पचाशकवलि । इम अधिकार छै भूरिरे ॥
आठम ॥ ५ ॥ सामायक पहिलां करणो ।
पाछल इरियानो पाठरे ॥ जाणेपण माने नहि ।
ग्रह फरमना ठाटरे ॥ आठम ॥ ६ ॥ विधिथी
सामायक करो । जिम पावो भवपाररेरे ॥ अवि
धिथी किरियाकरी।न छूटे भवनो लारोरे ॥आठम
॥ ७ ॥ (ढाल दूसरि) यतनी देशी ॥ परव तिथी
यैपोषध करियै शुद्ध आगमने अनुसरियै वालि
आठ कर्मने हरिये सलूणा भावभले आराधो एतो
आराधि सिव सुख साधो सलूणा आठम तिथी
आराधो ॥ १ ॥ आठम दोय चउदस कहियै अमा-
वस पूनिम लहियै ए छह तिथी चारित्र वहियै
॥ स० ॥ भा० ॥ २ ॥ वलि कल्याणक तिथी जाणो
पजुषण मनमा आणो इत्यादिक परव पिछाणो
॥ स० ॥ भा० ॥ ३ ॥ वीजे अंग पाचमे अंगे उपा-
सकदशा सुख संगे आवश्यक टीका उमगे
॥ स० ॥ भा० ॥ ४ ॥ इत्यादिक आगम भाखे पर्व
तिथी यै पोषध साखे विधियुत करता फल
चाखे ॥ स० ॥ भा० ॥ ५ ॥ जे नित्य पोषहने ताणे
आगम विधिते नवि जाणे हरिभद्र वचन परमाणे

। स० भा० ॥ ६ ॥ (ढाल ३) जडने कहजो मारा वालाजीरे ॥ ए देशी ॥ आठमपरव तिथी कही मारा वालाजीरे आराधो गुणगेह जगगुरु वंदिये मा० वा० ॥ १ ॥ ए तिथी कल्याणक घणा मा० वा० श्रिहु कालना गिणो तेह ज० व० मां० आचारंगना भाखियो मा० वा० भावना अध्ययन सार ज० व० ठाणागठाणे पांचमे मारा० वा० कल्पसूत्र मनु हारज० व० ॥ २ ॥ आगम प्रकरण चरित्र घणा मा० वं० एम प्रगटपणे तु जोयज० व० ए कल्याणक वीरना मा० वा० आगम माहे होय ज० व० ॥ ३ ॥ पजुषण करय कहो मा० वा० पचाश दिवश प्रमाण ते नवि माने मानथी मा० वा० जिन आज्ञा सुखखाण ज० व० ॥ ४ ॥ इम अनेक कल्पना करि मा० वा० मनमान्यो माने कोय ज०व० तुज आगम सुज मन वस्यो मा०वा० ए हिज भव भव होय ज० व० ॥५॥ विसवाद घणो पडगो मा० वा० केहने कहिये जाय ज० वा० अतिशय ज्ञानि तणो पड्यो मा० वा० विरहले केम खमाय ज० वा० ॥६॥ दुःषम कालमा ऊपनो मा० वा० दक्षिणभरतम झार ज० व० प्रभुनो सरणोमे ग्रह्यो मा० वा० प्रभु छो प्राणाधार ज० व० ॥ ७ ॥ तारक तारो तातजी मा० वा० हुं छु सेवक तुज्ज ज० अपराधि घणा तारिया मा० वा० केम ?

सुज्झ ज० व० ॥ ८ ॥ कलस ॥ श्री वीर जिनवर भविक सुखकर मात त्रिशलानदनो में थुण्यो आगम भक्ति सयुत दुरित कर्म निकदनो इम वरस उगणीसैचमोत्तर भाद्रव सुदि आठम समे कृपाचन्द्र सूरिस्तवन कीधो अनुभव ज्ञानप्रकासमे इति अष्टमी स्तवनम् ॥

॥ अथ श्री भोयणीजि नाथका स्तवन ॥

॥ राग सोरठ ॥ दीठा भोयणी गाम मझारा ए तो मल्लिजिनद मनुहारा ॥ दी० ॥ मुक्ताफल सम शुति प्रभुजीकी सुरति मोहन गारारे ॥ दी० ॥ १ ॥ चरण कमल कचन कछपसम मानु जगदा-धारा जानुअनोपम जिनना निरखी मोएगज गयो हारारे ॥ दी० ॥२॥ कर नरोरुह अद्भुत जाणी पङ्कज जलधि मझारा कटी सुरगि जिननी प्रेखी केसरी अरण्य विहारारे ॥ दी० ॥ ३ ॥ प्रभु वक्ष स्थल धीरअथी लजि मेरु अचल धारा जिन गम्भी-रता जाणी चर्म दधि लोकातकीन विहारारे ॥ दी० ॥ ४ ॥ निर लाछन प्रभु मुख जोडने, शशधर नित्य विहारा नासिका दीपशि[illegible] जाणी दीपक मघल कारारे ॥ दी० ॥ ५

पम राजे अष्टमी शशी समकारारे ॥ दी० ॥ ६ ॥ देश विदेशका जात्रि आवे भेटे प्रभु दीदारा वि-विधोत्सव पूजा करे प्रभुनी भाव धरि सुविचाररे ॥ दी० ॥ ७ ॥ घणा दीवमथी आश धरीने आयो जगदाधार कृपा नइ निज सेवक जाणी सुनिजर करो सुख कारारे ॥ दी० ॥ ८ ॥ शुभ उगणीसे गुणत्तरे वरसे वैशाख शुदि सुविचार आठम दिन प्रभुपदकज भेट्या आनंद अधिक अपारारे ॥ दी० ॥ ९ ॥

॥ इतिश्री भोयणीजी तीर्थका स्तवन सपूर्णम् ॥



अथ श्री संखेसरजीनो स्तवन ।

देशी जिह्नानी ॥ जग गुरु श्री सन्वेसर मडन पास जिनदा हो सुखकारी महाराज भव भय वारण शिव सुख तरुनो कदा हो दयाल ॥ ज० ॥ श्री अश्वसेन नरेश्वर कुल नभ चदा हो सु० वामामात सुजात जगत आनदा हो ॥ द० ॥ १ ॥ ज० ॥ सुदर नील वरण छवि अदभुत छाजे हो ॥ सुख ॥ मा० ॥ देह प्रमाण अनोपम नवकर राजे हो ॥ द० ॥ ज० ॥ रूप अधिक तुम देखी रति पति लाजे हो ॥ सु० ॥ मा० ॥ सहु सुरनर मिल सेवे वाछित काजे हो ॥ द० ॥ २ ॥ ज० ॥ प्रभावतीना प्राणेसर प्रभु

हो ॥ सुख० ॥ मोह भूपनी लीला थकी तुम न्यारा हो ॥ सुख० ॥ कमठमहासठमानविदारणहारा हो ज० तारण नाग नागेंद्र वणावणहारा हो ॥द०॥ ३ ॥ ज० जोवन वयमें दीक्षा लीनी सुविचारी हो ॥ सु० ॥ मेघमाली उपसर्ग करी गयो हारी हो ॥ द० ॥ ज० ॥ केवल पामी जगत जीव उपगारी हो ॥ सु० ॥ सर्व चतुर्विध थापी थयो शिवनारी हो ॥ द० ॥ ४ ॥ ज० ॥ तुम मोटा त्रिभुवनना नाथ कहावो हो ॥ सु० ॥ दीठा भविने दिलमा अधिक सोहावो हो ॥ द० ॥ ज० ॥ तारण तरण तुमे मवडो विरुद धरावो हो ॥ सुख० ॥ तो मुज तारता वार एवे नविलायो ॥ हो द० ॥ ज० ॥ देवल घडला जगमे देवता दीठा हो ॥ सु० ॥ मुज मनदमा ते नवि लागा मीठा हो द० ॥ज० सरागीपणो पामी थया ते धीठा हो ॥ सु० ॥ वीतराग प्रभुमुद्रा दीठी वली ठाहो ॥ द० ॥ ६ ॥ ज० ॥ काल अनादि थी पर परिणतिमा रमियो हो ॥ सु० पुद्गल संगे च्यार गतिमा भमियो हो ॥ द० ॥ ज० ॥ हिव प्रभु मूरति जोतां पातिक गमियो हो ॥ सु० ॥ प्रभुजी प्रसादें मोहराज उपसमियो हो ॥ द० ॥ ॥ ७ ॥ सांति सुधामय नवलो जिन दीदार हो ॥ सुख ॥ निरख्यो आज आनंद भरी सुखकार हो ॥ द० ॥ ज० ॥ पुन्य प्रबल थयो

अधिक दिवस श्रीकार हो ॥ सु० ॥ भगत वत्सल भले भेव्या प्रभु मनुहार हो ॥ द० ॥ ८ ॥ ज० ॥ घडियार देशमा श्रीसम्मेमर स्वामी हो ॥ सु० ॥ सुगुरु पसाये हिर प्रभुसेवा पामी हो ॥ द० ॥ उगणोत्तर उगणीस वैशाख्व नामी हो ॥ सु० ॥ कृपाचंद विभुपदकजमन विसरामी हो ॥ द० ॥ ज० ॥ ९ ॥

इति सम्

अथ दीवालीको स्तवन लि ।

॥ दुहा ॥ वर्द्धमान जिनचंदकु नमन करी करजोड कल्याणक शिवि वर्णवु मनमा आणी कोड ॥१॥ वीर जिणंद दिणंद सम, समवसर्यो गुण खाण भव्य कमल प्रतिबोधता त्रिभुवन जनमहिराण ॥ २ ॥ (ढाल पहली) प्रथम जिनेसर प्रणमीये ॥ ए देशी ॥ वर्द्धमान जिनराजजी गुण गण अगम अपार चोवीशम जिनचंद जगत सुह क सर्व जीव सुखकार ॥ व० ॥ ३ ॥ समकित पामीने प्रभु भव सत्तावीसकीधा वीसथानक तप सेवी जिन नाम बाधियो स्वगनणा सुख लीधा । व० ॥ ४ ॥ इंद्र आदेशथी आश्विर वदि त्रयोदशी दीश हरणेगमेसी सकमण कर्या प्रभुना त्रिशा

लाकूम्वे जगीश ॥ व० ॥ ७ ॥ चउद सुपन त्रिशला
जुवे कल्याणक फल एह वृद्धि पाम्या नरेशार सर्व
प्रकारथी जाग्रत थयो अति स्नेह ॥ व० ॥ ८ ॥
चैत्र शुदि तेरस समे जन्म थयो सुप्रसिद्द दिगकु
मरी तिहा ततक्षिण सूतिकारज करे इंद्र आवे
बहु रिद्द ॥ व० ॥ ९ ॥ पचरूप करी प्रभु ग्रही
मेरु सिखर ले जाय, चौसठ सुरपति आवि जन्मो
त्सव करी, माता पासे ठाय ॥ व० ॥ १ ॥ नदीसर
उछव करी देव गया निज ठाम मर्व सपदाव
धिलेहर्थी प्रभुनो थापीयो वर्धमान शुभ नाम ॥
व० ॥ ११ ॥ सिद्दारथ राजा घरे वरते मगल माल
इद्राणि उछरग रमाडे प्रभुभणी करति रगर
साला ॥ व० ॥ १२ ॥ आमलकी क्रीडा करे देव
परिक्षा काज हारि गयो देव बालक प्रभुनामपामी
यो माहावीर माहाराज ॥ व० १३ ॥ जोवनवय
जिनराजजी परण्या रमणि मनुहार ससारिक सुख
जाण्यो कृत्रिम जगनाथजी कृपाचद्र सुखकार ॥व०॥
१४ ॥ (ढाल बीजी) तीस वरस घरमा रह्या
मनमोहनजी दीधो वरसी दानरे जग सोहनजी
मातपीता स्वर्ग गया ॥ मन० ॥ प्रतिज्ञा पूरण
जाणरे ॥ जग० ॥ १५ ॥ च्यार निकायना देव मलि
॥ मन० ॥ दीक्षा उछव कीधरे ॥ जग० ॥ मिगसर
वदि दशमी विभु ॥ मन० ॥ सुखकर सजमली

धरे ॥ जग० ॥ १६ ॥ मन पर्यवज्ञान ऊपनो ॥ मन ० ॥ चउनाणी भग वतरे ॥ जग० ॥ एकाकी प्रभु विचरता ॥ मन० । करूणानिधि बलवतरे ॥ जग० ॥ १७ ॥ परिषहरिपु जीतता ॥ मन० । पराक्रमे बहु वीररे ॥ जग० । तप करता अति आकरो ॥ मन ॥ पाम्यो भव जलतीररे ॥ जग० । १८ ॥ बार वरस छद्मस्थरह्या ॥ मन० । ऊपर सार्ध ऋ मासरे ॥ जग० । वैशाख सुदि दशमीये ॥ मन० । उपनोके वल ग्यासरे ॥ जग० ॥ १९ ॥ लोकालोकने जाणता ॥ मन० ॥ पावापुरिजिनराजरे ॥ जग० ॥ सघचतुर्विध थापिने ॥मन०॥ सीधा सगला काजरे ॥जग०॥ २०॥ समवसरणमा विराजता ॥मन०॥ पर उपगारि महमरे ॥ जग० ॥ देशनादेता भवयने ॥ मन० ॥ मात्र करे सुरसतरे ॥ जग० ॥ २१ ॥ गौतमादि गणधरा ॥ मन० ॥ इग्यारह मनुहाररे ॥ जग० ॥ चउद सहस मुनिवर हुवा ॥ मन० ॥ श्रमणी छतीस हजाररे ॥ जग० ॥ २२ ॥ एकलाख गुण सठसहस ॥ मन० ॥ श्रावकनो परिवाररे ॥ जग० श्रण लाख अढार हजार ॥ मन० ॥ श्राविका सुविचार रे ॥ जग० ॥ २३ ॥ इत्यादिक परिवार थी ॥ मन० ॥ परवरिया गुण साररे ॥ जग० ॥ अतिम चोमासो रह्या ॥ मन० ॥ पावापुरी मझाररे ॥ जग० ॥ २४ ॥ सोल पहर लगदेशना ॥ [illegible] र उपगा-

ररे ॥ जग० ॥ पुन्य पाल राजा तणा ॥ मन० ॥
प्रश्ननो उत्तर सारर ॥ जग० ॥ २५ ॥ पंचम आरेना
भाव कह्या ॥ मन० भव जिवने हितकाररे ॥जग॥
पुन्य पाप ना फलतणा ॥ मन० । अध्यन पचावन
साररे ॥ जग० । २६ ॥ छत्रीश उत्तर कह्या
॥ मन० । मरुदेवी अधिकाररे ॥ जग० । पहोतर
वरसनो आउखो ॥ मन ॥ पुरण करि हितकारर
॥ जग ॥ २७ ॥ कार्ति वदि अमावसे मन ॥ सुगति
सिधाया वीररे ॥ जग ॥ सादि अनंत स्थिति लहीं
॥ मन० । नाठया कर्म जंजीररे ॥ जग० । २८ ॥
कासी कोसलनाराजवी ॥ मन ॥ पोसह कर्यो
सुखकाररे ॥ जग ॥ भाव उद्योत गयाथकी ॥मन॥
रत्न कुजया सुविचाररे ॥ जग ॥ २९ ॥ देव देवी
आव्या घणा ॥मन॥ प्रभुनी भक्ति विशेषरे ॥जग॥
दीवाली थइ लोकमा ॥ मन ॥ लह्यो गोतम ज्ञान
अशेषरे ॥ जग ॥ ३० ॥ बीजने भाइ जमाडीयो
॥ मन० ॥ भगनीये भाइ नीजरे ॥ जग० ॥ छठ
करीपोषहकरो ॥ मन० ॥ गुणना तीन करीजरे
॥ जग० ॥ ३१ ॥ छकल्याणक वीरना ॥ मन० ॥
गायाभक्ति विशालरे ॥ जग० ॥ जिनकृपाचंद्रसूरि
भणे ॥ मन० ॥ वर्त्योमंगल मालरे ॥ जग० ॥ ३२ ॥

॥ इति दीवालीनो स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ बीजनो थुइ लिः ॥

वास पूज्र जिन अतरजामी, मनविसरामी स्वामीजी ॥ भविजन तारण शिव सुखकारण, निजगुणना प्रभु कामीजी ॥ बीजदिवस जिनवर शिव सुखकर, चंद्रविमाने पामीजी ॥ नगर सुहा-रिमा मनुहारि, सेवो जिन सुखधामीजी ॥ १ ॥ वासु पुज्य पद्मप्रभु राता' चंद्र सुविधि जिन धव-लाजी ॥ मल्लिपास दोयनीला जाणो, मुनि सुव्रत नेमीकालाजी ॥ आठ द्विगुण जगनायक लायक, सोवन वरण सुहायाजी ॥ बीजदीवस नित्य नेर चउविहक जिन वंदु अहनिश पायाजी जी ॥ २ ॥ दुविध धर्म जिनवर प्रकाश्यो, अर्थ अधिक सुखकारिजी ॥ सूत्रे करि गणधर गुरु भास्यो, भविजनना उपगारिजी ॥ दोय शिक्षा दोय नय निक्षेपा, चउ भंगी मन आणोजी बीज आराधि सपदा मानि, परमारथ पहि चाणोजी ॥ ३ ॥ बीज दिवस उपवास करीजे, पडिक्कमणा-दिक सारोजी ॥ ए तप सुरतरु सरिखो जाणो, निरुपम सुख दातारोजी ॥ कुमार यक्ष तिमशा-सन देवि, चंडासानिधभूरिजी ॥ सघने होज्यो, जिनकृपाचं

॥ इति बीजकी थुइ

अथ पचमीनी थुइ लि ।



नेमि जिनेसर जग परमेसर, पचमि गतिना दाताजी ॥ श्रावण सुदि पचमि दिन जनम्या, त्रिभुवनमे विख्याताजी ॥ समुद्रविजयनदन, जगवदन, सीवादेवि माताजी ॥ सहस वरस प्रभु आयुष पाली, पाम्या शिवसुख साताजी ॥ १ ॥ कातिवदि सभवकेवल पाम्यो, मगसर सुविधि जायाजी ॥ चैत्र चद्रजन्म अजित संभव, अनत सुदि शिव पायाजी ॥ वैशाख वदि कुथु जिन दीख्या, पचमि जगत सुहायाजी ॥ धर्म धवल जैठ पचमि सीधा सुरनर मिल जश गायाजी ॥२॥ पचमि तपविधि भाखे जिनवर अर्थ अधिक सुखकारीजी ॥ सूत्रे गणधरगुरु शुभ दाखे, आगम माहि सारिजी ॥ नदि विधिकरी देव वादीनेका उसगगमन नारीजी ॥ इकावन ज्ञानना भेद नमीने, श्रुत ज्ञान सेवो इक तारीजी ॥ ३ ॥ पडिक्कमणो दृषटक करीने, ज्ञान आराधो प्राणीजी ॥ मगसरादि षट मासमा उचरो, आगममाहि गवाणीजी ॥ जिन आणाधारक सुखकारक, खरतरगण श्रुत खाणीजी ॥ श्रीजिनकृपाचद्रसूरिपभणे, साशन देवी सुहाणीजी ॥ ४ ॥

॥ इति पचमीकी थुइ सपूर्ण ॥

अथ अष्टमीनी थुई लि।

आठ प्रातिहारज जसुसोहे, मोहे भविजन चंदाजी ॥ चंद्रप्रभु आठम दिन सेवो अनुभव रसनाकंदाजी ॥ आठ प्रमादतजीने, धारो परमातम पद सारोजी ॥ द्वीप नंदिसर यात्रा करतां, अरिहंत ध्यान प्रकारोजी ॥१॥ रिषभ अजित सुमति सुव्रत नमि, सुपारस संभव आयाजी ॥ आदीश्वर दीक्षा अभिनंदन, नेमि पास सिव पायाजी ॥ भिन्न मास अष्टमी कल्याणक, तीन कालमा जाणोजी ॥ आठ जातिना कलश केइने, स्नात्र करे सुर राणोजी ॥ २ ॥ आठ प्रवचन माता पालो दोष सर्वने टालोजी ॥ ज्ञानादि आठ आचार सेवीने, आतमतत्त्व निहालोजी ॥ वीर जिनेसर अर्थ प्रकासै, सूत्र रचै गणधारीजी ॥ आठम तप आराधि भविजन, आठ वरस अधिकारीजी॥ ॥ ३ ॥ पर्व तिथीमेपोषध भाख्यो, सिद्धांत छे जसु साखीजी ॥ पडिक्रमणो तप जप आदरीयै, देव वंदनविधि राखीजी ॥ आठ मंगल आराधतां पावै, सुखसंपति गुणभूरिजी ॥ श्रुतदेवी सुपसाय लहीने, श्री जिन कृपाचंद्रसूरिजी ॥ ४ ॥

॥ इति आठम थुई संपूर्ण ॥

आराधे, मनमोहन जिनगुण अगाधे दायक लायक सिद्धि अराधे जग जश कीरति लाधे ॥ १ ॥ बारे गुण करि अरिहंत राजे सिद्ध आठ गुण गणि वर छाजै गुण छत्रीशाविराजै । पचीश गुण उवज्झायाराजै सत्तावीस मुनिमहाराजे सेवीगुण सुसमाजै ॥ दर्शन ज्ञान चरण तप कहिये भिउसठ इका वन सितर लहिये भेद पचाश काम कहियें, तेर सहसचालि गुणनो कहिये चउविसाजिनपति ध्यानजधरिये इम भवसायर तरिये ॥ २ ॥ आसुमासनी सातमसैती नव आविल करो सुखदेति चेतरमा सवेहेति नव ओलिशुद्ध भावे लेति इकयासिआविल महेहेति योधभोजनी खेति श्री श्रीपालने मयणाराणि हरप भरि हियडे ऋुलमाणि नवपद ध्यानधराणि नवपदनी नित्य स्तवना जाणि करो भविकजन शास्त्र प्रमाणी आगममाहि गवाणि ॥३॥ त्रणटक पांच शकस्तव कीजै दोयटक आवश्यक लीजैकाउसग्ग नित कीजै खमासमण शुद्ध चितमा धारो प्रदक्षिणा करि गुण सभारो जिम छुटे भव लारो देवी चक्केसरि सानिधकारि विमलेसर पूरे आस हमारि सिद्ध चक्रविधिसारि श्रीजिन कृपाचंद्रसुरि भाखे जिन आणा मनमाहि राखे भवि सिवसपदा चाखे ॥ ४ ॥

॥ इति नवपद पुद्रस ॥

कहिवाय जिन कृपाचद्रसूरि सेवताजी निरुपाधिक सुख थाय ॥ ९ ॥

॥ इति सिझाय संपूर्ण ॥

महावीर स्तवनलि

कर्मतणी कथनीरेकीहां जइने कहू ॥ एदेशी॥ वीर जिनेसर अलवेसर प्रभु सामलो, सुनिजर धरि सेवकनी एअरदासजो, वालेसरविनकेहने करीये वीनती, इम जाणीने आव्यो तुमारी पासजो ॥ वी० ॥ १ ॥ काल अनादि रझड्यो हु संसारमा भवभव ममता दुःख सह्या अपार जो वीतराग तमे तारक जाणो तासथी, तोपण वीतक वात कहू निर धारजो ॥ वी० ॥ २ ॥ काल अनंत रहियो सूक्षम निगोदमा, व्यवहारे तर राशीटोय कहत जो श्वासोश्वासमा अधिका सतरे भवकर्या इम करने नवि पाम्यो भवनो अंत जो ॥ वी ॥ ३ ॥ काल लब्धि पामीने परित्त पणो लयो, पृथिव्यादिक व्यवहारमां आव्यो तेण जो । कर्म उदय थी [illegible] निगोदमां, पुद्गल ५ [illegible] रय रह्यो [illegible] ॥ ४ ॥ व्यवहार [illegible] पणो हूं [illegible] आगमथी [illegible] [illegible] इंद्रिय [illegible] गयो तेहनी

॥ अथ नवपद सज्झाय ॥



॥ कृपानाथ मुज विनति अव धार ॥ ए देशी॥ सिद्धचक्र फल दायक्योजी श्री गौतम गणधार नृप श्रीपाल आराधिनेजी पामसे भवनोपार सुज्ञानि नवपद मनमा धार जिम लहो सुख अपार ॥ सुज्ञानि ॥१॥ तीन तत्व आराधमोजी देवगुरु ने धर्म दोय तीन चक्र भेद छेजी जाणो नवपद मर्म ॥ सुज्ञानि ॥२॥ अरिहत सिद्ध दोय देवनाजी भेद लहो सुजाण आचारज पाठक वलिजी मुनि त्रण गुरु तत्वजाण ॥ सु० ॥ ३ ॥ दर्शन ज्ञानचारित्रछजी तप चोथो धर्म भेद ए त्रण तत्वना जाणजोजी नवपदना उमेद ॥ सु० ॥ ४ ॥ काल अतीत ले सिद्ध थयाजी वर्तमानमा थाय अनागतमा सिर पामसेजी ते नवपद सुपसाय ॥सु० ॥ ५ ॥ नवपदना पर भावथीजी नवनिधि प्रगटे सार आधि व्याधि दूरेटलेजी कहे श्री जगदाधार ॥ सु० ॥ ६ ॥ नव आंबिल ओलीकरीजी जपता नवपद जाप त्रण टक देव वदन करीजी काउसग्गथी जाय पाप ॥ सु० ॥७॥ नव ओली विधियुत करीजी उजमणो निरधार गुरु मुखथी विधि जाणनेजी सघमगति सुखकार ॥ सु० ॥ ८ ॥ नवपद ध्याता आतमाजी ते नवपद

कहिवाय जिन कृपाचंद्रसूरि सेवतांजी निरुपाधिक सुख थाय ॥ ९ ॥

॥ इति सिझाय संपूर्ण ॥

महावीर स्तवनलि

कर्मतणी कथनीरेकोहा जइने कहु ॥ एदेशी ॥ वीर जिनेसर अलवेसर प्रभु मामलो, सुनिजर धरि सेवकनी एअरदासजो, वालेसरविनकेहने करीये वीनती, एम जाणीने आव्यो तुमारी पासजो ॥ वी० ॥ १ ॥ काल अनादि रह्यो हु संसारमा भवभव भमता दुःख सह्या अपार जो वीतराग तमे तारक जाणो तातजी, तोपण वीतक वात कहु निरधारजो ॥ वी० ॥ २ ॥ काल अनंत रहियो सुक्षम निगोदमा, व्यवहारे तर राशीदोय कहत जो श्वासोश्वासमा अधिका सतरे भवकर्या इम करते नवि पाम्यो भवनो अंत जो ॥ वी ॥ ३ ॥ काल लब्धि पामीने परित्त पणो लह्यो, पृथिव्यादिक व्यवहारमा आव्यो तेण जो । कर्म उदय थी फरि पडियो निगोदमां, पुद्गल परियट्ट असंख्य रह्यो दुःखेणजो ॥वी० ॥४॥ व्यवहार राशिकहवाणो हु तिहां ए जाणू तुझ आगमथी एकें आवसताकाल घणो गयो तेहनी

आगल वात जो ॥वा॥५॥ विकलेंद्रियनां भव सख्या तामें कीया दुख तणो नहीं आवे कहता पारजो, पचेंद्रि तिर्यंच पणो लहिने प्रभो जल थल खरचना भव कर्या दुखकारजो ॥ वी ॥ ६ ॥ शीत ताप भय भूख तृषा सही घणी क्रूर कर्म करी उपनो नरक मझारजो, छेदन भेदन ताडन तर्जनादिक सह्या परमाधम्यादि कृत कष्ट अपारजो ॥वी॥७॥ नरकथकी निकलीनें तीर्यंच वलि थयों, अकाम निर्जरा करता बहुलीवारजो, देव गतिमा उपजी सुरलपट थयो, तेथी सुकृत कीनो नहीं लगारजो ॥ वी ॥ ८ ॥ कर्म सयोगे एकेंद्रिमा उपनो, इम भव भ्रमण करता अनंता वेसजो, भजता भ्रमथी मनुष्यपणो मैं पामियो त्या पण न लयो धर्मतणो लवलेशजो ॥ वी ॥ ९ ॥ इम भवनाटक करता काल बहु गयो, पुन्य सयोगे पाम्यो प्रभु दीदारजो, स्वामी शासन लागो मुझने मीठडो हिव प्रभु करुणा करी मुज करो निस्तारजो ॥ वी ॥ १० ॥ तुम सरिखा साहिबनी सेवामैं लही, हिव प्रभु मुजने जाणो सेवक खासजो, तुम गुण गाणु एटली मुनिजर कीजिये कृपापात्र प्रभू पूरो मनडेनी आसजो॥वी०॥ ११॥ गुजरदेशे पानसरे प्रभु भेटिया वरष उगणीसे उगणोसैरें शुभ दीसजो, मौन इग्यारस मनमोहन

प्रभुजी मिल्या, आनंददायकजयकारी जगदीशजो ॥ धी० ॥ १२ ॥

॥ इति पद्म ॥

॥ अथ सिद्धाचल स्तवन लि० ॥

थापरयारिहो जिनजी श्रीसिद्धाचल सिखरे ऋषभ भले भेटिया हो राज । ऋ०॥भ०॥भे०॥था०॥ पूर्व संचित असुभ करम सहु मेटिया हो राज ॥ पू० ॥ सोरठ देशमे सोभता हो राज ॥ था० ॥ तीर्थ तीरथ मनुहार भव्यजन तारता हो राज ॥ भ० ॥ था० ॥ १ ॥ प्रथम शेत्रुंजयगिरिजियो हो राज ॥ था० ॥ तीन भुवन सिरताज आज दरसण लह्यो हो राज ॥ आ० ॥ थां० ॥ २ ॥ नेम जिनेसर राजियो हो राज ॥ था० ॥ स्यामसलूणो दीदार रेवतगिरि गाजियो हो राज ॥ रे० ॥ था० ॥ ३ ॥ पांच क्रोड मुनि परिवर्या हो राज ॥ था० ॥ पुंडरीक गणधार चैत्री शिवसुख वर्या हो राज ॥ चै० ॥ था० ॥ ४ ॥ आदीश्वर अलबेसरु होराज ॥ था० ॥ पूर्व निवाणु वार रायण पगला ठव्या होराज ॥ रा० था० ॥५॥ काति पूनम दस कोडसु होराज ॥ था ॥ शिव सुख पाम्या सार द्राविडवारिखिल्ला होराज ॥ द्रा० ॥ थां ॥

६ ॥ इम अनेक मुनिवर इहा होराज ॥ धा० ॥ सिद्ध थधु भरतार थया गीरीफरसता होराज ॥ वि० ॥ धा० ॥ ७ ॥ पूरव पुन्य पसाउले होराज ॥ धा ॥ सफल फली सहु आस जात्रा विधिसु करी होराज ॥ जा० ॥ धा० ॥ ८ ॥ रतनपुरीथी आविया हो० ॥ धा० ॥ आनद कुवर सुभ भाव लाभलीधो घणो होराज ॥ ला० ॥ धा ॥ ९ ॥ चतुरा चोमासो रह्या होराज ॥ धा० ॥ भगवति सुणयो भले भाव उपधान तप आदर्या होराज ॥ उ० ॥ धा ॥ १० ॥ उछवरग वधामणा होराज ॥ धा० ॥ वरत्या जय जयकार सुगुरु सुपसायथी होराज ॥ सु० ॥ धा ॥ ११ ॥ खरतर वसी छिपा वसी होराज ॥ धा० ॥ साकर उजम हेम प्रेमवाला वसी होराज ॥ पे० ॥ धा० ॥ १२ ॥ मोती विमल वसी आवीया होराज ॥ धा ० ॥ उलकाकोल सिद्धसिला सिद्धवट फरसीया होराज ॥ सि० ॥ धा ॥ १३ ॥ सुभ लगणीमे निसरे होराज ॥ धा० ॥ पोसदसमी सुविदीत आनद सुखपामिया होराज ॥ आ० ॥ धा० ॥ १४ ॥ भव भव चाहु चाकरी होराज ॥ धा० ॥ प्रभुचरणारीनित्त रूपाचद धीनवे होराज ॥ रूपा० ॥ धा० ॥ श्री सिद्धाचल सिखरे रुपभ भले भेटिया होराज ॥ रुप० ॥ धा० ॥ १५ ॥

॥ इति सिद्धाचलगोरी स्तवन सपूर्ण ॥

॥ अथ पंचमिका वृद्ध स्तवन लि० ॥



॥ दुहा ॥ सिद्धारथ कुल दिनमणि । त्रिसला देवि सुजात ॥ वर्द्धमान जिनचदकु । नमन करि परभात ॥१॥ गुरु दरियो भरियो गुणे किण विधि तरियो जाय ॥ बलिहारि गुरुदेवनी मो मनरह्यो लो- भाय ॥२॥ जिन वाणी पीयषरस पान करो निशि दीश ॥ पामो नाण सुहकरु । भाखै जगनाईश ॥३॥ (ढाल) रुपूर हुवै अति ऊजलोजी ॥ ए देशी ॥ ज्ञान आराधो भविजनाजी । आणि भक्ति अपार पाच ज्ञान प्रगटावताजी । पचमी सेवो उदाररे प्राणि जिनवाणि मन आण अनुपम सुखनी खाणरे ॥प्रा॥ जिन ॥ १ ॥ नाण वडो ससारमाजी ज्ञानथी सुगति थाय ज्ञान दीपक सम जाणियेजी सर्व लोक प्रगटावरे ॥ प्रा० ॥ जिन ॥ २ ॥ दिव्य ज्ञान लोचन कह्योजी लोकालोक देखाय ज्ञान विनापसुसारिखोजी जाणे नहीं नर कार्यरे ॥ ॥ प्रा० ॥ जिन ॥ ३ ॥ ज्ञान आराधक सर्वथीजी किरिया देशविचार भगवति सूत्रमा भाखियोजी आठमे शतक मझाररे ॥प्रा०॥जि०॥ ४ ॥ अज्ञानी क्रोड वरसमाजी तप करि निर्जरा जेह ज्ञानी सोस्वासमाजी कर्मक्षयकरे तेहरे ॥प्रा०

ज्ञानतणो अधिकार छे जी नदिसूत्र मझार क्रिया सहित ज्ञान सुदरूजी मोक्षतणो दातारे रे ॥ प्रा० ॥ ॥ जि० ॥ ६ ॥ जिमसोनो मुगधयीजी रत्नमुदडी ये जाण मल सोहे दूरे नर्योजी तिम करिया सुलनाणरे ॥प्रा०॥जि०॥७॥ महानिसीथमांहे कथ्यो-जी पचमी विधिविस्तार वीर जिनदे दाखियोजी सूत्रे श्रीगणधाररे ।प्रा०।जि० ।८। (ढालपीजो) लाभ आज अनोपम दीवाली ॥ ए देशी ॥ ज्ञान आराधी सपदासाधी निज गुणनो उपगारी भवि नाण सुहकर गुणकारी ॥९॥ पचर्कड तप विधियुत भवि करजे नाणने सेयो उपकारी ॥ न० ॥ ना० ॥ मगसर माह फागुण वैसाख जेठ आषाढने दिल धारी ॥ भ० ॥ ना० ॥ ११ ॥ ग्यपदमासे विधियुत लीजे शुभदिन गुरुनुरागी सारी ॥ स० ॥ ना० १२॥ देव वदन दहरासर करीने पोथी पूजो सुविचारी ॥भ०॥ ना० ॥१३॥ गीतारथ गुरु चरण नमीने नदि विधिकरि हितकारी ॥ स० ॥ ना० ॥१४॥ गुरुमुख उपवास भाव करीने पडिक्कमिटालो अतिचारि ॥ स० ॥ ना० ॥ १५ ॥ श्रावणमो ओनदगुरु पासे पचमी दिन आरभ टारी ॥ स० ॥ ना०॥१६॥ पांच वरस पाच मासने उत्कृष्ट जाव जीवकरे इकतारी ॥ स० ॥ ना० ॥ १७ ॥ पाच मास लघु पचमीकी जे स्तवन गुडकहे ब्रह्मचारी ॥ स० ॥ ना० ॥ १८ ॥

ढालनीजी पहली अग सुहामणोरे ॥ ए देशी ॥ ज्ञाननमो गुण भवि जनारे नाण प्रकाशक जाणरे सुगुणनर पचमीतपविधियुत करीरे लाल पामो अविचल नाणरे ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥१९॥ दोय भेदे नाण जाणीयेरे । निश्चयने व्यवहाररे ॥सु०॥ त्रण अनुयोग व्यवहारमारे ॥ ला० ॥ द्रव्य निश्चय सुखकाररे ॥सु० ॥ ज्ञा० ॥ २० ॥ पाच ज्ञानना भेदछेरे इकावन सुविशेषरे ॥ सु ॥ भिन्न भिन्न ते दाखव्यारे ॥ला०॥ तेह कहु लवलेशरे ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ २१ ॥ मति ज्ञानना जाणियेरे अठावीश प्रकाररे ॥ सु० ॥ श्रुतना चवदने वीशछेरे अक्षरादिक सुविचाररे ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ २२ ॥ अवधि ज्ञ असंख्य भेदछेरे मन पर्यव युग जाणरे ॥ सु० ॥ लोकालोक प्रकाशकरे ॥ ला ॥ केवल समये आणरे ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ २३ ॥ तीन ज्ञान प्रत्यक्षछेरे देश सर्व सुजगीशरे ॥ सु० ॥ अवधि मनपर्यव बहिरे ॥ ला० ॥ देश प्रत्यक्ष कह्या ईशरे ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ ॥२४॥ केवल सर्व प्रत्यक्षनेरे ध्यावो परम पवित्ररे ॥ सु० ॥ दोय परोक्ष पिछाणियेरे ॥ला०॥ मतिश्रुत भेद विचित्ररे ॥सु०॥ ज्ञा० ॥२५॥ च्यार ज्ञान ठप्या कह्यारे श्रुत अनुयोग विचाररे ॥सु०॥ उद्देशादिक जाणियेरे अनुयोग द्वार मझाररे ॥सु०॥ ज्ञा०

उपगारि श्रुत नाणथीरे जाणे आज त्रिकालरे ॥सु०॥ परबोधक श्रुम सैवियेरेलाल सदगुरु चरण निहालरे ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ २७ ॥ वायण प्रछना परावर्त्तनारे अनुपेहा दिलधारंरे ॥ सु० ॥ धर्मकथा कही कीजीयेरे ॥ ज्ञा० ॥ सझाय पांच प्रकाररे ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ २८ ॥ अंग इग्यार बार उपागछेरे दश पयन्ना नदीशेरे ॥ सु० ॥ ७ छेद चउमूल दिलधरोरे ॥ ज्ञा० ॥ अनुयोगद्वार पैतालीसरे ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ २९ ॥ ढाल चोथी ॥ गरवेनी स्वामी शरीर सोसाइ गयो ॥ एदेशी ॥ ज्ञान भजो भवि प्राणीया वछित फलदातार ज्ञानी दीपक सम कह्यो सूत्रे श्री गणधार ॥ज्ञान०॥ ३० ॥ सुरतरु सुरमणि सुरगवि कल्पलता अनुकार एहथी अधिको जाणिये महिमा अगम अपार ॥ ज्ञा० ॥ ३१ ॥ काल अनादि लगे भम्यो मिथ्यामति भजमाय सम्यग् ज्ञान प्रगटे यदा भवमे न रहाय ॥ ज्ञा० ॥ ३२ ॥ समकित गुण प्रगटायवा त्रणकरण करे जीव समकित ज्ञान एकण समे लेई सुगुण अतीव ॥ज्ञा० ॥३३॥ देश विरति पामे सदा पल्य असख्यभाग जाय सर्व विरतिलही चरण धर ज्ञानादिक चितलाय ॥ ज्ञा ॥०॥३४॥ घाति कर्मनो क्षपकरी केवल ज्ञान प्रकाश भव्यकमल प्रतिबोधता विचरे भगवत खास ॥ ज्ञा० ॥ ॥ ३५ ॥

ज्ञानचरण दोय भेदछे मुक्ति कारणजाण तप सजम चिहु दाखिया भाव ए मनमा आण ॥ज्ञा०॥ ॥ ३६ ॥ पाचमि आराधना करि, ज्ञान भगति करो तप पूरण थयां कीजिये उलमणो सुविचार ज्ञा० ॥ ३७ ॥ पाच पांच ज्ञानादिना उपगरण करो सार धन खरचो बहु भावथी लहो पुन्य भार ॥ ज्ञा० ॥३८॥ देवो दान सुपात्रने साहमी वछल सार भगति करो साहमी तणी शक्ति आगो उदार ॥ ज्ञा० ॥ ३९ ॥ वरदत्तने गुणमजरी ज्ञान आराधिने सुख, पामी अविचल पदलह्या मेटीने भव दुःख ॥ ज्ञा० ॥ ४० ॥ कलश । सवत् उगणीसे पिचत्तर पोषवदि एकम भले सुरत बदर भविक सुखकर सीतल जिन सुपसाउले श्रीवीर जिनवर पचमितप विधि प्रकाश्यो सुभमणे सुविहित परपर गच्छखरतर जिन कृपाचद्रसूरि भणे ॥४१॥

॥ इति पचमी ४ ढालनी स्तवनम् ॥

॥ अथ इग्यारसनो २ ढालनी स्तवन लि० ॥

॥ दुहा ॥ स्वस्ति श्री मगलकरण हरण ताप जिणचद धीर जिनद दिनंदसम ... आन ॥१॥ गौतम आदि गणधरा त्रिकरण योगे वदता पामेकोड

एकादशी तिथी वर्णवु शास्त्रतणे अनुसार विधि पूर्वक आराधता पामे पद निर्वाण ॥ ३ ॥ (ढाल पहली) पणिआरीनी ॥ देशी ॥ नेमिजिनेसर ऊप दिशे सुन्दरगिरिरे लोय सांभले कृष्ण राजान रा लाछे द्वारिका नगरी समवसर्या ॥ सु० ॥ रेवता चल उद्यान ॥ वा० ॥ ८ ॥ पर्वाराधन फल कह्या ॥ सु० ॥सांभले परषदा बार ॥वा०॥ पर्युपण चउ- मासा भला ॥सु०॥ नवपद ओलीसार वा० ॥ ५ ॥ पंचमी बीज आठम कही ॥सु०॥ जिन कल्याणक जाण ॥ वा० ॥ एकादशी इम जाणिवे ॥ सु० ॥ पर्वातिक मन आण ॥ वा० ॥ ६ ॥ मगसर सुदि एकादशी ॥ सु० ॥ पर्वमाहि श्रीकार ॥ वा० ॥ अरनाथ दीक्षा ग्रही ॥ सु० ॥ पाम्या भवनोपार ॥ वा० ॥ ७ ॥ मल्लि जन्म सजमलियो ॥ सु० ॥ पाम्यो केवलज्ञान ॥ वा० ॥ नमि नाथने ऊपनो ॥ सु० ॥ केवल नाण प्रधान ॥ वा० ॥ ८ ॥ पांच कल्याणक अतिभला ॥ सु० ॥ थया इण भरत मझार ॥ वा० ॥ तिमहिजऐरवत क्षेत्रमा ॥ सु० ॥ भाखे जगदाधार ॥ वा० ॥ ९ ॥ पांच भरत ऐरव- तदलि ॥ सु० ॥ पंचकल्याणक जाण ॥ वा० ॥ दशक्षेत्रना इम जाणिये ॥ सु० ॥ पांचकल्याणक आण ॥ वा० ॥ १० ॥ तीनकाल गिणना थकां ॥ सु० ॥ दोढसे कल्याणक थाय ॥ वा० ॥ तिथी-

माहि सिरोमणि ॥ सु० ॥ इग्यारस सुखदाय ॥ वा० ॥ ११ ॥ अनतकल्याकण इण परे ॥ सु० ॥ अनत चोवीसी जोय ॥ वा० ॥ मौनकरी आरागिये ॥ सु० ॥ एहथी सिवसुख होय वाला ॥०१२॥ चोविहार उपवासथी ॥ सु० ॥ पोसह करिने सार ॥ वा० ॥ सुगुरु चरण सेविकरी ॥ सु० ॥ काउसग्ग दिलधार ॥ वा० ॥ १३ ॥ मोनकरी मल्लिनाथजी ॥ सु० ॥ एकदिवस सुखकार ॥ वा० ॥ मौन प्रथा इण परि थइ ॥ सु० ॥ लह्यो केवल श्रीकार ॥ वा० ॥ १४ ॥ (ढाल तीजी) माता त्रिशला झुलावे पुत्र पालणे ॥ एदेशी सुखकर देवनिरजन नेमाजिनद इम उपदिसै ॥ ए आकडी ॥ भविजन भावधरिने साभले श्री जिनवाण। अमीरस वयणे श्रवणअजलीभरपीवता एतो जावै भव भव निर्मित कर्म निवाण ॥ सुख० ॥ १५ ॥ भवियण अग इग्यार आराधवा तप विधिए कही, जेहथीपामे अनुपम महिमा अतुल अपार वरसइग्यारने मास एकादश तप करा सपूरण तप हुवा होवे मगलकार ॥ सु० ॥ १६ ॥ ॥ भ० अंग अग्यारे लिखावे सुवरण अक्षरे पुस्तक पूठा ठवणी नवकरवाली सार, झिलमिल पाटीने वलि पाटली सम घरतणा मनुहार ॥ सु १७ ॥

ञाथी घासकृपावलि कोथली, यदवा मिजासणने चदरवा अधिकार पूठीया चोपड रूमाल नाना भातिना पाटा पाटलाने त्रिगडो रचै सुखकार ॥ सु० ॥ १८ ॥ भ० केसर सूखड ख्सकूचीने वाटकी प्यालाने कलसा अगलूहणा दिलधार चामर छत्र श्रयने आभूषण रत्ने जम्पा रचियै वास रेपादि पूजा विविधि प्रकार ॥ सु० ॥ १९ भ० देवपूजा तिम गुरुपूजा विधि आदरो करियै साहमी वछल धरियै भावविसाल रात्रिजागो करिजिन गुण गावै प्रीतसु अधिको धनखरचीने लहियै रग रसाल ॥ सु० ॥ २० ॥ भ० इग्यारसनो तपसे वो भवियण भावसु सुव्रत सेठे कीधो पौषधथी चित्त लाय चोर अग्नीना उपद्रवथी ते उगर्यो एनिथी सेव्या सिवमारगमां सुखे जवाया ॥ सु० ॥ २१ ॥ कलश ॥ इम नेमिजिनवरस्यामसुखकर तिवा दिवी मदनो एकादशी तप फल प्रकास्यो भविक जन आनदनो सर, नय, निधि, भूविक्रमवरसैपोष गदि एकादशी जिन कृपाचद्रसूरि पभणो सुगुरु सेवो उल्हसी ॥ सु० ॥ २२ ॥ इति इग्यारशावृद्ध स्तवनम् ॥

॥ इति कृपाचद्रसूरि विरचितस्तवन सग्रह सपूर्ण ॥

॥ देशनालिख्यते ॥

,जात्रा नवाणु करीये ए चाल

एहवा सद्गुरु वांदीए भविकजन एहवा स०॥ आप तरे अवरनकु तारे सरणतिहारोगहिये भ० ॥ १ ॥ जिमसारथपतिसार्थजनकु वांछितदेशेव-हींये भ० ॥ २ ॥ तिमसद्गुरुअमृतउपदेशे लहेभ-विकसुखकहींये भ० ॥३॥ गोपसमागुरुगुण नितधारे रापेगोजनमहीए भ० ॥ ४ ॥ वलिनिर्यामकउपमा-धारै जिमनावेकनौतरीए भ० ॥ ५ ॥ एकअसजम दोयविधिधर्मात्रिविधदंडपरीहरीए भ० ॥ ६ ॥ चारकषायनिवारकतारक पंचमहाव्रतधरीए भ० ॥ ७ ॥ षटकाय रक्षकमहाभयजीवक असरणसर-णकहीजिये ॥ ८ ॥ एहवासद्गुरुनीबलिहारी सरणगृहीनिसतरीए भ० ॥ ९ ॥ गौतमस्वामी-समामुनिउत्तम सर्वजीवममधरीए भ० ॥ १० ॥ रिदयकमलनितप्रीतिराखीजे आनंदशिवपदलहीए भ० ॥ ११ ॥ इति देशना संपूर्ण ॥

॥ अथवधावा ॥

भवितुमे वदोरे शीतलजिनपतिरे ए चाल.
सुखकरस्वामीरे श्रीतीर्थंकुरुरे वरधमान
दरशन
भविजनवदोरे भावेगच्छपतिरे ॥ १ ॥

सुधरमगणधररे ज्ञाताद्वादश अंग। जंबुस्वामीरे
शिष्यसोहामणोरे चौदपुरवधरअंग ॥ भ० ॥ २ ॥
प्रभवमजयमवजगमेंपरगटारे श्रीजसोभद्रमुणिंद।
श्रीसंभुतविजयभद्रबाहुजीरे श्रीथुलभद्रदिणंद भ०
॥ ३ ॥ एमअनुक्रमदशपुरवधररे द्रुगावपरमुणीश।
श्रीजिनमतदीपायोभूतलेरे सुरनरनामतसीस भ०
॥४॥ तासपरपरचन्द्रकुलेभलारे श्रीकोटीकगणधार।
श्रीउद्योतनसूरिसुहामणारे वयरीसाखमझार भ ॥५॥
वरधमान परमुख शिष्यजेहनारे चारअशी परमाण।
गच्छचोराशीमगथात्याथकीरे जाणचतुरसुजाण
भ० ॥६॥ तासशीषजिनेश्वरसूरिजीरे दुर्लभरायसम
क्ष। खरतर बिरुदलह्योतेरवडोरे मठपतिजीतप्रतक्ष
भ० ॥७॥ नवअंगीवृतिकारकदीपातारे श्रीअभयदे-
वसूरिराय । श्रीजिनवल्लभजिनदत्तगच्छपतिरे
श्रीजिनकुशलअमाय भ० ॥ ८ ॥ परमप्रभावकइ
णगछमेंथयारे आचारजगुणवंत । शुद्धसमाचारी
जगतेंहनीरे सुणि हरषितहोय संत भ० ॥ ९ ॥
शुद्धपरपरथयाअनुक्रमेंरे श्रीजिनलाभसूरीश ।
तासपटोधरजगमांपरगडारे श्रीजिनचंदमुणींश
भ० ॥ १० ॥ तेजप्रतापे जीत्यो दिनमणीरे
सोम्यपणे द्विजपत्ति । गंभीरगुणसाग रेनजी
तीयोरे सुरसेवेदिनरत्ति भ० ॥ ११ ॥ स्याद्वाद
जिनधर्मवखाणतारे नयनिक्षेपविचार। भगपदारथ-

अतिविस्तारतारे भावेभाविहिनकार भ० ॥ १२ ॥ ज्ञानप्रदकक्रियासाथेभलीरे जिनवाणी अनुसार। ग्हनेसेवोरे स्युभुलाभमोरे थायसफलअवतार भ० ॥ १३ ॥ सुरतरुछांडीबावलआदरेरे कोइनरमन्द गिमार । एडव्याणीसाचोमतकरोगे लहिग्योग णधार भ० ॥ १४ ॥ नामधारकआचारजजेगणरे पचमकालमझार । विणइणसरीग्योजगमांकोनहिरे स्वपरतारणहार भ० ॥१५॥ वाचकलावण्यकमलपसायथीरे कमलसुदरनीण्वाण । जेमानसीतेसुखनितपामसीरे पातिकनीकारिहाण भ० ॥ १६ ॥ इति वधावो ॥

॥ वधावो ॥

मोति यडे मेह वरसीयो सखिआज न्हवो आणद पूज पधाया विहरता नामे सौभाग्यसुरिंद ॥ जिनहर्षसूरिंदनोनदरे सदगुरुसुरतरुनोकदरे । मुखसोहे पूनमचदरे सखी मोतीडे मेह० ॥ १ ॥ क्षांतिगुणकरीशोभता सखिपचमहाव्रतधार । वरछत्रीसगुणेसदा विचरेजेनिरतिचाररे ॥ रखी आजे परउपगाररे उपशमरसना भडाररे । पालेपचाचाररे सखी मोती० ॥ २
तणीपरे गाजता सखिमोठी
आपतरे परतारता

सद्‌आगमगाजेजाणरे तपेजिनक्षलहलमजमाणरे। तेहनो अतिशय वियणाणरे सखी मोती० ॥ ३ ॥ परतिखसुरतरु सारखा। सखीइणपचमकाल साध जेहने शोभता। मुनिवरजीसामोतीमालरे फेट थियम्ने केइयालरे यदीजेतेहत्रिकालरे। सखी मोती० ॥ ४ ॥ सूरीमकलसिरशेहरो सखोम्न रतरगछसिणगार जैनधर्मदीपावता महिमाजेहनी अपार रे सद्‌सघतणासिरदाररे। मग्निसुमतिनणा भरताररे जेहनेप्रणमेंनरनाररे सखी मोती० ॥ ५ ॥ सूत्रअरथविस्तारता सम्बिदेताधर्मोपदेश दान शीलतनपभावना धारैभावनासुविशेषरे द्रव्यादिक अर्थ विशेषरे गुणअरपर्यायप्रदेशरे सखी मोती० ॥ ६ ॥ सुणता श्रीजिनराजना मग्निअमृतवचन-विलास क्षणमें कर्मसमूहनो मग्निनिश्चैहोवेनाशरे थावैनिजज्ञानप्रकाशरे कहैयालसुगुरुसहवासरे करतानिजरूप सुभासरे सखी मोती० ॥ ७ ॥

॥इति बधावो॥

॥ अथ गुहली लिख्यते ॥

॥ नणदलविन्दलीदे ए चाल ॥

जिनसासण उपकारी जगगुरु गोतमगणधारीरे सहीया गुहली करो गुहली करो गुरुसगे गुरुमाति

तणे उछरगेरे महीयां ॥ विचरता मुनिराया राज-ग्रहीनगरी आयारे सही ॥१॥ पचेंद्रीविषयनिवारी नवविधब्रह्मव्रतधारीरे सही च्यारकषायकुटाले पचमहाव्रनसुधापालेरे सही ॥ २ ॥ सेवैपचाचार धरेपचसुमतिमनुहाररे सही त्रिणगुप्तिविलिछाजै इमछत्रीसगुणेगुरुराजेरे सही ॥ ३ ॥ चरणकरण गुणसगी शुद्धातम अनुभवरगीरे सही उत्सर्गने अपवादी षट्नयगम भगमवादीरे सही० ॥ ४ ॥ मोक्षमारगउपदेशी धरधरमध्यानशुभलेशीरे सही० रत्नत्रय अभ्यासी भविजनचितकमलविकाशीरे सही० ॥ ५ ॥ श्रेणिकनरपति आवै गणधरवदन शुभभावैरे सही० चेलणास्वस्तिकपूरे मोहतिमिर-भरमनैचूरेरे सही ॥ ६ ॥ निसुणीगुरुमुखवाणी समकितनिरमलकरेशाणीरे सही श्रुतसेवा जे करस्ये तेकीर्तिसागरपदवरस्यैरे सही ॥ ७ ॥ इति गुहली सपूर्णम् ।

॥दूं०॥ आज आंध चालो सहियर सद् गुरुवदण जइये । सद् गुरुवदणजइये आपण सद्गुरुवदन जइयेरे ए आकडी ॥ देशविदेशवि हारकरता। च्याननादरिया द यासिंधुउपगारकरेया गुरुपधार र अहियारे आज ॥ १ ॥ क्रोध मान मद दूर करीने, अतिशयगुणना दरिया, एवा कृपाचद्र मुनिवरजी ॥ मानुकल्पद्रुमघरेयारे आज ॥ २ ॥ जिनसाशन-

उद्योतकरणकु भवजलधिमें अवतरिया सद्गुरुनो उपदेश सुणीने ॥ संयमपालेशोरियारे आज ॥३॥ गुरु पधारया अतिशय मगल ॥ विपतव्यथामयदरिया जैनशास्त्रमेंनिभरनिपुणा स्यादवादकादरियारे आज ॥ ४ ॥ दीपकसम जगमें गुरु जाणो, अज्ञान तिमिरकुहरिया, देउपदेशभविकनेतारे करुणारसें-करिभरियारे आज ॥ ५ ॥ भगवतिसूत्रसुणावे सद्गुरुशा श्रुसुणरसवरसे भारभेदपटद्रव्यघनाव लि ॥ भविमन पात्रकहरमेरे आज ॥ ६ ॥ सयम सतरप्रकारेपाले, पाचसुमतिमेंसहिया ॥ भावमार-गनिहालेसद्गुरु निजपरणतिमारहियारे आज ॥ ७ ॥ ए गुरुनागुण कहीयेकेता मुजेज्ञाननहि एता शिष्यादिवरगेपरवरिया,रतनअमोलसदेतारे आज ॥ ८ ॥ खरतरगच्छमेंगविद्वराजे, जयजयकार-वरताया, कृपाचंदमुनिवर कृपाथी शिष्यानदगुण-गायारे आज ॥ ९ ॥ इति गुहली सपूर्णम् ॥

॥ दें० ॥ अथचउमासुलिख्यते प्रणमुपदपकजपासरे, जसनामेलीलविलासरे गुरुगुणगायाउलास, सउ-मयवीनवे गुरुजीतमनेरे दृढवरमन पावन करिया अमने मह ॥ १ ॥ आसाढमासे अत्रे पधार्यारे, शिष्यसगाथे चारल्याव्यारे, सहुसघतणेमन भाव्या मह ॥२॥ भुजनगरमाहेअधिकारीरे सेठसारुकारठे मनोहारीरे, तेतोवाट जोतातातुमारी मह ॥३॥

श्रावणमासे सुममतिजागीरे ॥ सदुसघमत्यो गुण रागीरे, भगवतिसुणवारढलागी स ॥ ४ ॥ वलिअधिकअधिक ओछवथायरे, श्रीसजनैहरपन मारे निहा आनदआनद वरताय स ॥ ५ ॥ तुमेज्ञानरतनभडाररे करवा अमपर उपगाररे थजो नीगारानाआधार स ॥६॥ भादरवो भलीपरेगाजेरे गुरुराजनीठकुराइछाजेरे तुमारी वाणी गगापूरे गाजे स० ॥ ७ ॥ तुमेरागथीनहिरगायारे, नहि द्वेषरिपुथी थघायारे महामोहथी नहिलिपाया स० ॥ ८ ॥ पाचेइद्री सुभटथीमूरारे आलसविकथाथी दूरारे, चारचोरकर्याचकचूरा स ॥ ९ ॥ आसुमासेतीआपवैरागीरे थया कचनकामनी त्यागीरे जेनीमुक्तिपुरीसुलयलागी स० ॥ १० ॥ धनमाल अने राजघानीरे महासकटआकरजानीरे, तुमेछोडी दुनीयादिवानी स० ॥ ११ ॥ तुमविन्या-वेलटीये विंटायारे, जेनी करपतरुसमकायारे, गतो सुमताजलथी विंटाया स० ॥ १२ ॥ ज्ञानदोरीथी मनकपिवाध्युरे तीनतत्त्वरमणमनसाध्युरे जिह्वा-समकिनअदभूत लाध्यु स० ॥ १३ ॥ तुमेशास्त्रसो-धीरसलीधोरे, महामाहरिपुवसकीधोरे, तुमेअनु-भवप्यालो पीधो स० ॥१४॥ तुमआणा सदा शिर धरसुरे, तपनियमविसेसे करशुरे, वलिविनयसदा अनुसरसु स० ॥१५॥ कृपाचदजीनामतुमारोरे प्रती-यो र कर्योथइसारोरे ॥ पून्यवतने लागोछे

स० ॥१६॥ मुनिजीनीदेशना बहुसारीरे भविजीवने लागेछे प्यारीरे, प्रतिबोधपाम्यानरनारी स० ॥ १७ ॥ मुनीवरसयमसूरारे, मुनिक्रियामाहेपूरारे परिणामे मुनीजीअतिरुडा स० ॥ १८ ॥ मुनीजीए लाभघणेरालीघारे, श्रीसघनाकारजासिधारे, उपगारमहामुनिजीए कीधा स० ॥ १९ ॥ मुनिजी सुनामघणु मारुरे। रूपाचदजी लागेप्याकरे। जिनसाशन घणुअजवाल्यु स० ।२०। जेहमुनीवरना गुणगासेरे। प्राणीपापरहितथासेरे। वलीशिवपूरिनयरीये जासे स० ॥ २१ ॥ चतुर्मासइणीपरेगायोरे, चतुरविधश्रीसघ सवायोरे ॥ तिहा आनद मगल वरतायो। स० ॥ २२ ॥ इति चोमासो स० ॥



अथ गुहली लिख्यते ॥ विचरता गामोगाम मुनि आव्या एणे ठाम आछेलाल, बहु परिवारेप रिवर्याजी ।१। मारवाड देशउत्पन्न। बीकारेरसपन्न॥ आछेलाल ॥ माता अमरादे जनमियाजी ॥ २ ॥ पालेपचआचार। छकायजीवप्रतिपाल। आछेलाल सुमतिगुपती सुमालताजी ॥३॥ करता उग्रविहार ॥ आव्या कच्छमुझार। आछेलाल भद्रेसर पधार्याजी ॥ ४ ॥ देशविदेशनालोक वादवा आवेथोक। आछेलाल। नयगम प्रसनपूछताजी ॥ ५ ॥ वाचे सूत्रसिद्धात। नदीसूत्रमहत ॥ आछेलाल। सदे-

हभागे सद्गुणाजी ॥ ६ ॥ चतुरचेलातुमच्यार विद्यातणाभंडार । आछेलालगुरु आणाशिरधारताजी ॥७॥ गुहली करी चित्तलाय पामी आप पसाय आछेलाल । इणीपरे सेवककरेवीनतीजी ॥८॥ इति ॥

॥ पुन. गुहली ॥ जीरेमारे प्रणमुश्रीजिनवरपाय । सुकीमननो आमलोजीरेजी ॥ जीरेमारे पामीतासपसाय खरतरपतिकृपाकरोजीरेजी ॥१॥ जीरेमारेपनरमा श्रीजिनराय । धर्मनाथजी सुखकरोजीरेजी ॥ जीरेमारेवीकानेर उत्पन्न, गुरु कुलवामेदिनभणी जीरेजी ।२। जीरेमारेरतनत्रयनिधान । माताअमरादे जनमीयाजीरेजी जीरेमारेग्रहगणमाजोतीसार ॥ सुरजकलाअतिसारीछेजीरेजी ॥३॥ जीरेमारेमुनिपरिवारमानेम ॥ गुणसत्यावीसेशोभताजीरेजी । जीरेमारे कच्छदेशनालोक आतमगुणेअनुसरेजीरेजी ।४। जीरेमारे माडवीनगर मुझार ॥ श्रावक लोकसुखी आवशेजीरेजी । जीरेमारे सुगुरुचरणपसाय रागीसोभागी करेविनतीजीरेजी ॥५॥ जीरेमारे नरनारीना वृंद ॥ आवेवट्ट आडंवरेजीरेजी । जीरेमारे नववाटशजीसणगार ॥ माणकथाइ लावेगुहलीजीरेजी ॥६॥ जीरेमारे आतुमथाजोटपीठ ककुथाई पूरे [illegible] रेसमकीत श्रीफलहाथ । लाली [illegible] रेजी ॥७॥ जीरेमारे

जैन दर्शन में तत्त्व-मीमांसा

—मुनि नथ